RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(अगस्त-2025)

उत्तर प्रदेश

अतीत की विरासत भविष्य की प्रेरणा

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

साधु पुरुषों के रक्षण, दुष्कृत्य करने वालों के नाश, तथा धर्म संस्थापना के लिये, मैं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।

श्रीकृष्ण@गोवर्धन

श्रावण/भाद्रपद

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

अगस्त २०२५

वर्षा ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
३१ श्री राधा अष्टमी, महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ, महारविवार व्रत, दूर्वा अष्टमी भाद्रपद शुक्ल पक्ष अष्टमी					१ श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	२ श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी
३ श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	४ श्रावण सोमवार व्रत श्रावण शुक्ल पक्ष दशमी	५ पुत्रदा एकादशी श्रावण शुक्ल पक्ष एकादशी	६ प्रदोष व्रत श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	७ श्रावण शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	८ वरलक्ष्मी व्रत, पूर्णिमा व्रत श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	९ रक्षा बंधन, श्री गायत्री जयंती, संस्कृत दिवस श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
१० भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	११ भाद्रपद कृष्ण पक्ष द्वितीया	१२ कजरी/कज्जली तीज, संकष्टी (बहुला) श्री गणेश चतुर्थी व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष तृतीया	१३ भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्थी	१४ श्री बलराम जयंती, हल षष्ठी भाद्रपद कृष्ण पक्ष पंचमी	१५ स्वतंत्रता दिवस भाद्रपद कृष्ण पक्ष सप्तमी	१६ श्री कृष्ण जन्माष्टमी भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी
१७ सिंह संक्रान्ति, श्री कृष्ण जन्म व्रत (वैष्णव) भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी	१८ भाद्रपद कृष्ण पक्ष दशमी	१९ जया एकादशी भाद्रपद कृष्ण पक्ष एकादशी	२० प्रदोष व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष द्वादशी	२१ भाद्रपद कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	२२ भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	२३ कुशोत्पाटिनी अमावस्या भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या
२४ भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	२५ श्री वराह जयंती भाद्रपद शुक्ल पक्ष द्वितीया	२६ हरतालिका तीज भाद्रपद शुक्ल पक्ष तृतीया	२७ श्री गणेश चतुर्थी व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्थी	२८ श्री ऋषि पंचमी भाद्रपद शुक्ल पक्ष पंचमी	२९ लोलार्क षष्ठी भाद्रपद शुक्ल पक्ष षष्ठी	३० श्री ललिता सप्तमी भाद्रपद शुक्ल पक्ष सप्तमी

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

अगस्त, 2025

वर्ष : 25 अंक : 08

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान

रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

मुकेश कुमार

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309

फोन न. 0120 4565851

ईमेल : keshavsamvad@gmail.com

वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

उत्तर प्रदेश : अतीत की विरासत भविष्य की प्रेरणा....05

गांव से ग्लोबल तक : उत्तर प्रदेश की औद्योगिक क्रांति....07

प्लास्टिक प्रदूषण और इसका पर्यावरण पर प्रभाव....09

पंच परिवर्तन : पर्यावरण पर ध्यान केंद्रित करना क्यों महत्वपूर्ण है?....11

डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता : पर्यावरण जागरण की एक समर्पित साधिका....14

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और समरसता....16

स्वस्थ पर्यावरण : एक स्वच्छ भारत की नींव....18

दिल्ली की झुग्गियों में बदलाव की नयी रोशनी देता 'लक्ष्य'....20

स्वतंत्रता दिवस : चेतना, संकल्प और संयम का महापर्व....22

आयुष्मान भारत योजना से ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य क्रांति : तकनीक से बदलते ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र....25

पंच परिवर्तन....27–31

स्वदेशी विकल्प जरूरी....32

आत्मनिर्भरता स्टोरी....33–34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय...................................

भारत का हृदय स्थल, उत्तर प्रदेश एक ऐसी भूमि है जहाँ इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिकता की गूंज कण–कण में सुनाई देती है। उत्तर प्रदेश, जो एक समय केवल अपनी ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक महत्त्व के लिए जाना जाता था, अब नवभारत की औद्योगिक, शैक्षिक और तकनीकी क्रांति का ध्वजवाहक बनकर उभर रहा है। यह बदलाव आकस्मिक नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी नेतृत्व, जनसहभागिता, नीति–सुधार और निरंतर प्रयास का प्रतिफल है। आज यह प्रदेश अपने गौरवशाली अतीत को संजोए हुए आधुनिक भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

प्राचीन काल से ही यह धरती ज्ञान, धर्म और संस्कृति का केंद्र रही है। अयोध्या, काशी, मथुरा, प्रयागराज और सारनाथ जैसे तीर्थस्थल न केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय दर्शन और चेतना की जड़ें भी इन्हीं में निहित हैं। उत्तर प्रदेश वह भूमि है जहाँ राम और कृष्ण ने अवतार लिया, जहाँ बुद्ध ने उपदेश दिया, जहाँ कबीर, तुलसीदास और सूरदास ने भक्ति और समाज सुधार के बीज बोए। इस सांस्कृतिक गौरव ने प्रदेश को एक मजबूत सांस्कृतिक नींव दी है, जो आज भी इसकी पहचान को विशेष बनाती है।

उत्तर प्रदेश केवल अतीत की गाथा नहीं है। यह वर्तमान की चेतना और भविष्य की प्रेरणा भी है। हाल के वर्षों में प्रदेश ने जिस तरह विकास के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं, वे न केवल भारत के लिए उदाहरण हैं, बल्कि वैश्विक मंच पर एक सशक्त पहचान की ओर अग्रसरता भी दर्शाते हैं। योगी सरकार द्वारा संचालित औद्योगिक क्रांति, निवेश प्रोत्साहन, बुनियादी ढांचे का विस्तार और 'एक जनपद एक उत्पाद' जैसी योजनाएं राज्य को 'गांव से ग्लोबल' की ओर ले जाने में सफल रहीं हैं।

औद्योगिक विकास को जनकल्याण से जोड़ने की यह रणनीति उल्लेखनीय है। प्रदेश की नीतियाँ अब केवल शहरी केंद्रों तक सीमित नहीं, बल्कि पूर्वांचल, बुंदेलखंड, तराई और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे विविध क्षेत्रों में संतुलित विकास की दिशा में बढ़ रहीं हैं। डिफेंस कॉरिडोर, डेटा सेंटर, टेक्सटाइल पार्क, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ, और स्टार्टअप इन्क्यूबेशन केंद्र यह सिद्ध करते हैं कि उत्तर प्रदेश अब केवल एक राज्य नहीं, बल्कि एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

विकास के साथ–साथ प्रदेश ने सामाजिक समरसता, कानून–व्यवस्था और शासन में पारदर्शिता को भी प्राथमिकता दी है। भ्रष्टाचार पर लगाम, भूमाफियाओं पर कार्रवाई और परियोजनाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन उत्तर प्रदेश की बदली हुई कार्यसंस्कृति को दर्शाते हैं। 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में प्रदेश की रैंकिंग इसका प्रमाण है कि शासन और प्रशासन अब निवेशकों और उद्यमियों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में सफल हो रहा है।

शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में उठाए गए कदम भी सराहनीय हैं। नए विश्वविद्यालयों और संस्थानों की स्थापना, तकनीकी शिक्षा पर बल, और कौशल केंद्रों के माध्यम से युवाओं को रोजगार–योग्य बनाना राज्य की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है। महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन, स्टार्टअप नीति और डिजिटल इनोवेशन के क्षेत्र में किए गए प्रयास यह स्पष्ट करते हैं कि उत्तर प्रदेश समावेशी विकास के मार्ग पर है।

पर्यावरणीय संतुलन भी अब विकास योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। बायोएनर्जी, सौर ऊर्जा और सतत औद्योगिक परियोजनाएं यह संकेत देती हैं कि उत्तर प्रदेश विकास की उस राह पर है जहाँ प्रकृति और प्रगति एक–दूसरे के पूरक बन रहे हैं। बुंदेलखंड और पूर्वांचल में स्थापित सौर ऊर्जा परियोजनाएं न केवल ऊर्जा आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं, बल्कि हरित भविष्य की दिशा में उठाया गया ठोस कदम भी हैं।

आज जब हम स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तब उत्तर प्रदेश हमें यह सिखाता है कि स्वाधीनता केवल राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं होती, बल्कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आत्मनिर्भरता भी उतनी ही आवश्यक है। और जब कोई प्रदेश इस समग्र स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होता है, तब वह न केवल अपने लिए, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक प्रेरणा बनता है।

आज का उत्तर प्रदेश तेज़ी से प्रगति की ओर बढ़ रहा है। बुनियादी ढांचे, औद्योगीकरण और तकनीकी विकास में राज्य नई ऊँचाइयों को छू रहा है। युवा शक्ति, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक पर्यटन इसकी रीढ़ हैं।

उत्तर प्रदेश न केवल अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा ले रहा है, बल्कि एक समृद्ध, सशक्त और आत्मनिर्भर भविष्य की ओर भी अग्रसर है। वास्तव में, यह राज्य भारत के भविष्य का प्रेरक स्रोत बनता जा रहा है।

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

उत्तर प्रदेश
अतीत की विरासत भविष्य की प्रेरणा

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली (हापुड़)

भारतवर्ष की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक चेतना में यदि किसी राज्य का सर्वाधिक गहन योगदान रहा है, तो वह है उत्तर प्रदेश। यह भूमि केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि सभ्यताओं का पालना, आंदोलनों की जन्मस्थली और संस्कारों की पाठशाला रही है। गंगा, यमुना और सरयू की निर्मल धाराओं से सिंचित यह प्रदेश हजारों वर्षों की यात्रा करते हुए आज भी अपने गौरवशाली अतीत की छाया में एक सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर है।

उत्तर प्रदेश का इतिहास वेदों और पुराणों की ऋचाओं से आरंभ होता है। यही वह भूमि है जहाँ रामायण और महाभारत जैसी अमर गाथाओं की पृष्ठभूमि रची गई। अयोध्या भगवान श्रीराम की जन्मभूमि है, तो मथुरा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि। काशी को 'मोक्ष की नगरी' कहा जाता है, जहाँ की गलियों में आज भी अध्यात्म की गूंज सुनाई देती है। ये स्थल न केवल धार्मिक महत्त्व रखते हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत मिसालें भी हैं।

बौद्ध धर्म के इतिहास में भी उत्तर प्रदेश का स्थान विशिष्ट है। सिद्धार्थ से बुद्ध बनने की यात्रा यहीं पूर्ण हुई। सारनाथ में भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था, जिससे बौद्ध धर्म का शुभारंभ हुआ। यही नहीं, जैन धर्म के तीर्थंकरों, सूफी संतों, और भक्ति कालीन कवियों ने भी इसी भूमि को अपनी साधना की धरा बनाया। कबीर, तुलसीदास, रहीम, सूरदास जैसे संतों ने जनमानस को भाषा, भक्ति और दर्शन के माध्यम से जोड़ा।

राजनीतिक दृष्टि से भी उत्तर प्रदेश सदैव से भारत के हृदयस्थल के रूप में उभरा है। मुगल सल्तनत की राजधानी आगरा और फतेहपुर सीकरी रही, तो नवाबी संस्कृति का केंद्र अवध बना। आजादी के आंदोलन में उत्तर प्रदेश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे, चंद्रशेखर आजाद और पंडित नेहरू जैसी विभूतियों ने इसी भूमि पर जन्म लेकर स्वाधीनता की अलख जगाई।

आधुनिक भारत के निर्माण में उत्तर प्रदेश की भूमिका केवल ऐतिहासिक स्मृतियों तक सीमित नहीं रही। स्वतंत्रता के बाद राजनीति, प्रशासन, साहित्य, कला, विज्ञान और खेल के क्षेत्र में इस राज्य के लोगों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। भारत के सबसे अधिक प्रधानमंत्री इसी राज्य से हुए हैं, जिसने इसे 'राजनीतिक राजधानी' जैसा दर्जा दिलाया।

आज उत्तर प्रदेश न केवल जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है, बल्कि इसकी विविधता भी इसे विशेष बनाती है। यहाँ की भाषाएँ–हिंदी, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेली–कवि हृदयों की उपज हैं। उत्तर प्रदेश की संस्कृति में होली की मस्ती से लेकर मुहर्रम की संवेदना, दीपावली की आभा से लेकर ईद की रौनक तक, सब कुछ समाहित है। यह गंगा–जमुनी तहजीब का सबसे सुंदर उदाहरण है, जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के लोग सौहार्द के साथ रहते हैं।

राज्य की कृषि परंपरा इसकी रीढ़ रही है। गंगा के मैदानी क्षेत्र में उपजाऊ भूमि, नदियों की उपलब्धता और मेहनतकश किसान–इन सबने मिलकर इसे 'भारत का अन्न भंडार' बनाया है। गेहूँ, चावल, गन्ना, आलू और सब्जियों की भरपूर पैदावार न केवल प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि अन्य राज्यों को भी खाद्य आपूर्ति में सहायता करती है।

हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश ने विकास की नई ऊँचाइयों को छुआ है। इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़क, रेल, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा और डिजिटल क्रांति के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, गंगा एक्सप्रेसवे, डिफेंस कॉरिडोर जैसे परियोजनाओं ने औद्योगिक विकास को नई दिशा दी है।

राज्य सरकार द्वारा निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा रहा है, जिससे घरेलू और विदेशी निवेश आकर्षित हो रहा है। लखनऊ, नोएडा, कानपुर और वाराणसी जैसे शहर अब केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक केंद्र नहीं, बल्कि औद्योगिक और आईटी हब के रूप में उभर रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रदेश तेजी से प्रगति कर रहा है। नए विश्वविद्यालयों, मेडिकल कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों की स्थापना से युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। कौशल विकास योजनाओं के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ठोस प्रयास हो रहे हैं।

पर्यटन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का महत्त्व वैश्विक है। यहां के धार्मिक स्थलों–अयोध्या, मथुरा, काशी, प्रयागराज, चित्रकूट, श्रावस्ती की ओर लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष आकर्षित होते हैं। ताजमहल, जो विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है, भारत की पहचान बन चुका है। सांस्कृतिक उत्सवों, कुम्भ मेला, रंग महोत्सव, और देव दीपावली जैसे आयोजनों ने उत्तर प्रदेश को सांस्कृतिक पर्यटन का केन्द्र बना दिया है।

स्वाभाविक है कि इस तेजी से बढ़ते विकास के साथ–साथ चुनौतियाँ भी हैं। जनसंख्या का बोझ, बेरोजगारी, शहरीकरण का असंतुलन, पर्यावरणीय दबाव और सामाजिक असमानताएँ–इन सभी से जूझते हुए उत्तर प्रदेश को सतत् विकास की ओर अग्रसर होना है। किन्तु जिस राज्य की धरती पर राम, कृष्ण, बुद्ध और कबीर जैसे महान व्यक्तित्वों ने जन्म लिया हो, वहाँ के जन–मन में समस्याओं से पार पाने की सामर्थ्य भी निहित होती है।

उत्तर प्रदेश का इतिहास वेदों और पुराणों की ऋचाओं से आरंभ होता है। यही वह भूमि है जहाँ रामायण और महाभारत जैसी अमर गाथाओं की पृष्ठभूमि रची गई। अयोध्या भगवान श्रीराम की जन्मभूमि है, तो मथुरा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि। काशी को 'मोक्ष की नगरी' कहा जाता है, जहाँ की गलियों में आज भी अध्यात्म की गूंज सुनाई देती है। ये स्थल न केवल धार्मिक महत्त्व रखते हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत मिसालें भी हैं।

आज उत्तर प्रदेश एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ अतीत की महान विरासत उसके पाँव तले नींव की तरह मजबूत है, और भविष्य की संभावनाएँ आकाश की तरह असीम हैं। यह राज्य भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन की धुरी है और जब तक उत्तर प्रदेश प्रगति नहीं करता, तब तक भारत की समग्र प्रगति अधूरी रह जाती है।

ऐसे में आवश्यकता है कि हम उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक गरिमा को केवल गौरवगाथा के रूप में न देखें, बल्कि उसे प्रेरणा का स्रोत मानते हुए आज की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करें। युवा वर्ग, जो आज डिजिटल क्रांति के साथ जुड़ा है, यदि अपनी जड़ों की समझ के साथ आगे बढ़े, तो उत्तर प्रदेश की पहचान केवल एक राज्य के रूप में नहीं, बल्कि भारत की प्रगति की धुरी के रूप में होगी।

हमारे पुरखों ने जिस उत्तर प्रदेश की नींव संस्कृति, ज्ञान, धर्म और संघर्ष से रखी, आज उसी प्रदेश को हम नवाचार, उद्यमिता, शिक्षा और सेवा के माध्यम से नये युग की प्रेरणा बना सकते हैं। यह राज्य यदि एक समय में रामराज्य का प्रतीक था, तो आज वह सुशासन, विकास और समावेशी समाज का आदर्श बन सकता है।

उत्तर प्रदेश की मिट्टी में वह सामर्थ्य है जो भारत को नेतृत्व दे सकती है–संस्कृति में, नीति में, अर्थव्यवस्था में और मूल्यों में। अतीत की यह विरासत ही वह दीप है, जिसकी रोशनी से हम भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं और जब यह दीपक प्रज्वलित होगा, तब केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, पूरा भारत आलोकित होगा। ■

ISSN No. 2581-3528

गांव से ग्लोबल तक : उत्तर प्रदेश की औद्योगिक क्रांति

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षकश्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक

कभी देश का सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद कृषि प्रधान और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा माने जाने वाला उत्तर प्रदेश आज भारत के औद्योगिक मानचित्र पर एक नई, सशक्त और आत्मविश्वासी पहचान के साथ उभर रहा है। यदि आज इसे 'भारत का विकास इंजन' कहें तो यह अतिशयोक्ति नहीं है। यह परिवर्तन महज संयोग नहीं, बल्कि सुविचारित नीतियों, दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम है। वर्ष 2017 से पहले जिस प्रदेश को निवेशकों की दृष्टि में असुरक्षित और जटिल प्रक्रियाओं वाला माना जाता था, आज वहीं वैश्विक कंपनियों के लिए सबसे भरोसेमंद और आकर्षक निवेश स्थल बन गया है। इस बदलाव के केंद्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का वह नेतृत्व है जिसने औद्योगिक विकास को केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित न रखकर सामाजिक परिवर्तन, क्षेत्रीय संतुलन, रोजगार सृजन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनने का साधन बनाया। योगी आदित्यनाथ का औद्योगिक दृष्टिकोण केवल योजनाओं और आंकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भारत के आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक उत्थान का जीवंत दस्तावेज है। जिसमें देशभर के युवा, किसान, व्यापारी तथा उद्यमी इस औद्योगिक नवजागरण का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हैं।

योगी सरकार ने औद्योगिक विकास को शीर्ष प्राथमिकता दी है। उनका दृष्टिकोण बिलकुल स्पष्ट है –"उत्तर प्रदेश को भारत का औद्योगिक और निवेश केंद्र बनाना।" इसके लिए सबसे पहले 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में सुधार पर जोर दिया गया। विभिन्न स्वीकृतियों और अनुमतियों को एकल खिड़की प्रणाली से जोड़कर प्रक्रियाएं सरल की गईं। इससे उद्यमियों को सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने से मुक्ति मिली और पारदर्शिता बढ़ी।

वर्ष 2018 में आयोजित पहली 'उत्तर प्रदेश इन्वेस्टर्स समिट' ने उत्तर प्रदेश में निवेश के नए युग की शुरुआत की। रुपये

4.68 लाख करोड़ के प्रस्ताव आए और अधिकांश परियोजनाओं पर समयबद्ध काम भी शुरू हुआ। वर्ष 2023 में 'ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट' ने इस गति को कई गुना बढ़ा दिया–33.5 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव और इलेक्ट्रॉनिक्स, डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग, टेक्सटाइल, नवीकरणीय ऊर्जा, लॉजिस्टिक्स और फार्मा जैसे क्षेत्रों में बड़े कॉर्पोरेट घरानों की सक्रियता ने स्पष्ट कर दिया कि उत्तर प्रदेश अब दुनिया के औद्योगिक मानचित्र पर निर्णायक भूमिका निभाने को तैयार है। सैमसंग, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स, एयरटेल डेटा सेंटर, एचसीएल, आईटीसी, अडानी समूह और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी कंपनियों ने यहां बड़े पैमाने पर निवेश कर अपने प्रोजेक्ट्स को क्रियान्वित किया। अब वर्ष 2025 की तीसरी समिट में में 60 से 80 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव का लक्ष्य है।

औद्योगिक विकास के लिए मजबूत बुनियादी ढांचा अनिवार्य है और उत्तर प्रदेश ने इस दिशा में भी ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। पूर्वांचल, बुंदेलखंड और गंगा एक्सप्रेसवे जैसे मेगा प्रोजेक्ट्स ने औद्योगिक रीढ़ को सुदृढ़ किया। 594 किलोमीटर लंबा गंगा एक्सप्रेसवे–जो देश का सबसे बड़ा होगा। इसके किनारों पर औद्योगिक पार्क, वेयरहाउसिंग हब और लॉजिस्टिक सेंटर विकसित किए जा रहे हैं। जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, जो एशिया का चौथा सबसे बड़ा एयरपोर्ट बनने जा रहा है, उत्तर भारत का प्रमुख लॉजिस्टिक और व्यापार केंद्र बनेगा। मेरठ में प्रदेश की पहली इंटीग्रेटिड ट्रांजिट ओरिएंटेड डेवलपमेंट (टीओडी) टाउनशिप की भी नींव रखी गयी है। मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब, आईटी पार्क और इंडस्ट्रियल टाउनशिप जैसे प्रोजेक्ट निवेश को गति दे रहे हैं। नोएडा और ग्रेटर नोएडा डेटा सेंटर और इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभरे हैं।

निवेशकों को सुविधा देने के लिए 'निवेश मित्र' पोर्टल और 'उद्योग बंधु' कार्यक्रम लागू किए गए, जिनसे त्वरित मंजूरी और आवश्यक अनापत्ति प्रमाण पत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं। भ्रष्टाचार–रोधी कदम, पारदर्शिता और मुख्यमंत्री द्वारा व्यक्तिगत मॉनिटरिंग ने निवेशकों का भरोसा मजबूत किया।

प्रदेश के औद्योगिक विकास को विकेंद्रीकृत करने के लिए 'एक जनपद एक उत्पाद' (ODOP) योजना लागू की गई। जिसने पारंपरिक उद्योगों को पुनर्जीवित किया और वैश्विक बाजार में उनकी मांग बढ़ाई। बनारसी साड़ी, मुरादाबाद की पीतल कला, आगरा का जूता उद्योग, फिरोज़ाबाद का कांच उद्योग जैसे उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ा गया, जिससे लाखों कारीगरों और

उद्यमियों की आय में वृद्धि हुई। यह योजना भारत की सांस्कृतिक विविधता और स्थानीय कौशल को आर्थिक प्रगति से जोड़ने का सफल मॉडल साबित हुई है। परिणामस्वरूप वर्ष 2022–23 में राज्य का निर्यात 2.21 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचा, जबकि 2017 में यह 88,000 करोड़ रुपये था। 2024–25 तक यह आंकड़ा 2.5 लाख करोड़ रुपये पार कर गया, जिससे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs) को बड़ा लाभ मिला।

डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर भी राज्य की औद्योगिक रणनीति का प्रमुख आधार है जो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के विज़न को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अलीगढ़, झांसी, कानपुर, चित्रकूट, आगरा और लखनऊ में फैले इस कॉरिडोर में 5,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हुआ है और 100 से ज्यादा रक्षा उपकरण निर्माता सक्रिय हैं। साथ ही अब तक 25,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। टाटा, अडानी डिफेंस, एयरो इंडिया जैसी कंपनियां यहां उत्पादन इकाइयां स्थापित करने की दिशा में सक्रिय हैं। इससे न केवल रक्षा उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो रही है, अपितु यह स्थानीय युवाओं को उच्च कौशल आधारित रोजगार भी प्रदान कर रहा है।

मानव संसाधन विकास को औद्योगिक प्रगति का आधार बनाते हुए 'उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन' के तहत 20 लाख से अधिक युवाओं को उद्योग की जरूरतों के अनुसार प्रशिक्षित किया गया है। 18 नए आईटीआई और पॉलिटेक्निक कॉलेज खोले गए और हर विधानसभा क्षेत्र में कौशल केंद्र स्थापित हो रहे हैं। स्टार्टअप नीति 2020 ने नवाचार को बढ़ावा दिया, जिसके तहत नवंबर 2024 तक 9,200 से अधिक स्टार्टअप पंजीकृत हुए, जिनमें 40 प्रतिशत महिला उद्यमियों के थे। कृषि आधारित उद्योगों के लिए 'फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्रियल पॉलिसी 2023' लागू की गई, जिसके तहत शीतगृह, प्रोसेसिंग यूनिट और निर्यात केंद्रों को प्रोत्साहन मिला। इससे किसानों की आमदनी बढ़ी और कृषि उपज की बर्बादी में कमी आई। साथ ही, राज्य में बायोएनर्जी परियोजनाओं ने सतत और पर्यावरण–अनुकूल औद्योगिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र के लिए 1,000 करोड़ रुपये का विशेष फंड, मुख्यमंत्री ग्राम उद्योग योजना और स्वरोजगार अभियान जैसी पहलें की गईं, जिनसे 2023–24 में इस क्षेत्र में 30 लाख से अधिक नए रोजगार सृजित हुए। नवीकरणीय ऊर्जा नीति 2022 के तहत बुंदेलखंड और पूर्वांचल में बड़े सौर पार्क विकसित हो रहे हैं, ताकि 10,000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य हासिल हो सके।

राज्य की 10 से अधिक सेक्टर–विशिष्ट नीतियों–आईटी एवं आईटीईएस, इलेक्ट्रिक व्हीकल, टेक्सटाइल, फूड प्रोसेसिंग, लॉजिस्टिक्स, स्टार्टअप आदि ने हर उद्योग को उसकी जरूरत के मुताबिक प्रोत्साहन और सुविधाएं प्रदान कीं। इस रणनीति ने औद्योगिक आधार को विविध और मजबूत बनाया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का वह नेतृत्व है जिसने औद्योगिक विकास को केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित न रखकर सामाजिक परिवर्तन, क्षेत्रीय संतुलन, रोजगार सृजन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनने का साधन बनाया। योगी आदित्यनाथ का औद्योगिक दृष्टिकोण केवल योजनाओं और आंकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भारत के आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक उत्थान का जीवंत दस्तावेज है।

आंकड़े बताते हैं कि 2016–17 में राज्य का सकल घरेलू उत्पाद ₹10.70 लाख करोड़ था, जो 2023–24 में बढ़कर ₹21.31 लाख करोड़ हो गया– लगभग दोगुना। 2017 से अब तक 40 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव आए, जिनमें से 10 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाएं क्रियान्वयन में हैं। वर्ष 2017 से 2025 के बीच 1.5 करोड़ से अधिक रोजगार सृजित हुए।

योगी सरकार की विशेषता यह रही कि औद्योगिक विकास केवल महानगरों तक सीमित न रहकर राज्य के सभी क्षेत्रों में संतुलित रूप से फैला है। चाहे बुंदेलखंड में डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर की स्थापना की गई हो, या पूर्वांचल में टेक्सटाइल पार्क, तराई में खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग ज़ोन का विकास हो, ये इस बात का प्रमाण है कि सरकार ने क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए भी ठोस प्रयास किए हैं।

यह परिवर्तन केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं हैं, अपितु इन्हें प्रदेश के हर कोने में महसूस किया जा सकता है। गांवों में लौटे कारीगर, शहरों में स्थापित नए उद्योग और युवाओं में रोजगार के अवसर इसकी गवाही देते हैं। अपराध पर लगाम, भूमाफियाओं पर कार्यवाही और समयबद्ध परियोजना क्रियान्वयन ने उत्तर प्रदेश की साख को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊंचा किया है।

इस व्यापक औद्योगिक परिवर्तन के केंद्र में योगी आदित्यनाथ का अनुशासित, राष्ट्रवादी और विकासोन्मुख नेतृत्व है। उन्होंने औद्योगिक विकास को केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय संतुलन, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी जोड़ा। उनका मानना है कि जब तक देश का सबसे बड़ा राज्य औद्योगिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगा, तब तक भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित नहीं हो सकता। ■

ISSN No. 2581-3528

प्लास्टिक प्रदूषण और इसका पर्यावरण पर प्रभाव

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल
के.डी. कॉलेज सिम्भावली, हापुड़

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तरक्की ने मनुष्य को असीमित सुविधाएँ दी हैं। इन्हीं में से एक है प्लास्टिक, जो आज हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। चाहे वह बोतल हो, बैग हो, पैकेजिंग हो या खिलौने– हर जगह प्लास्टिक की मौजूदगी स्पष्ट दिखाई देती है। लेकिन यह सुविधा अब हमारे पर्यावरण के लिए अभिशाप बनती जा रही है। प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक संकट का रूप ले चुका है, जिससे पृथ्वी का हर जीव, हर पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित हो रहा है।

प्लास्टिक की विशेषताएँ और उपयोगिता :- प्लास्टिक हल्का, मजबूत, लचीला, सस्ता और टिकाऊ होता है। यह पानी, रसायनों और बैक्टीरिया से आसानी से खराब नहीं होता, इसलिए इसका उपयोग व्यापक स्तर पर होता है। चिकित्सा, निर्माण, खाद्य पैकेजिंग, वाहन निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र उद्योग आदि में प्लास्टिक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन यही विशेषताएँ इसे विनाशकारी भी बनाती हैं क्योंकि यह प्राकृतिक रूप से नष्ट नहीं होता।

प्लास्टिक प्रदूषण का अर्थ :- प्लास्टिक प्रदूषण का अर्थ है वातावरण में प्लास्टिक कचरे का अनियंत्रित और असंगठित रूप से जमा होना। यह कचरा न केवल भूमि पर बिखरा होता है, बल्कि नदियों, झीलों और महासागरों तक में पहुंचकर वहां के जीवन को भी प्रभावित करता है। जब प्लास्टिक को जलाया जाता है, तो यह विषैली गैसें उत्सर्जित करता है, और जब इसे फेंका जाता है, तो यह सैकड़ों वर्षों तक मिट्टी या जल में बना रहता है।

प्लास्टिक प्रदूषण के प्रमुख स्रोत :- सिंगल यूज़ प्लास्टिक (Single-use Plastic) जैसे पानी की बोतलें, थैलियाँ, स्ट्रॉ, कप आदि जिन्हें एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दिया जाता है।

उद्योगों से निकलने वाला कचरा :- फैक्ट्रियों में उपयोग की गई प्लास्टिक सामग्री, पैकेजिंग वेस्ट आदि।

♦ **घरेलू अपशिष्ट :-** प्लास्टिक रैपर, कंटेनर, खिलौने, टूटी हुई वस्तुएँ।

♦ **समुद्री गतिविधियाँ :-** मछली पकड़ने के जाल, नावों से गिरा प्लास्टिक कचरा।

♦ **कृषि क्षेत्र :-** प्लास्टिक मल्चिंग, पाइपलाइन, कीटनाशक बोतलें।

प्लास्टिक प्रदूषण के पर्यावरणीय प्रभाव

1. **भूमि प्रदूषण :-** प्लास्टिक कचरा मिट्टी में वर्षों तक पड़ा रहता है। यह मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित करता है, जल संचयन को रोकता है और भूमि की प्राकृतिक संरचना को बदल देता है। जब यह माइक्रोप्लास्टिक में बदलता है, तो यह मिट्टी में घुलकर पौधों और जीवाणुओं को नुकसान पहुंचाता है।

2. **जल प्रदूषण :-** नदियों, झीलों और समुद्रों में प्लास्टिक पहुँचकर जलचर जीवों के लिए घातक जाल बन जाता है। कछुए, मछलियाँ, पक्षी आदि प्लास्टिक को भोजन समझकर निगल लेते हैं जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। महासागरों में फैला प्लास्टिक 'प्लास्टिक द्वीप' का रूप ले चुका है।

3. **वायु प्रदूषण :-** जब प्लास्टिक को जलाया जाता है, तो इससे डाइऑक्सिन, फ्यूरन जैसी विषैली गैसें निकलती हैं जो वायु प्रदूषित करती हैं और मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालती हैं, जैसे अस्थमा, कैंसर, हार्मोनल असंतुलन आदि।

4. **वन्य जीवों पर प्रभाव :-** जंगलों में फैला प्लास्टिक कचरा जंगली जानवरों द्वारा खा लिया जाता है, जिससे उनकी पाचन क्रिया बाधित होती है और मृत्यु तक हो जाती है। पक्षी प्लास्टिक के टुकड़ों से अपने घोंसले बनाते हैं जो उनके लिए खतरनाक होते हैं।

5. **मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :–** माइक्रोप्लास्टिक हमारे जल और भोजन के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश कर रहा है। अनुसंधान बताते हैं कि यह हमारे शरीर में अंत:स्रावी तंत्र को प्रभावित कर सकता है, जिससे गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

♦ **कृषि पर असर :-** मिट्टी की गुणवत्ता में कमी आने से फसल उत्पादन घटता है।

♦ **मत्स्य उद्योग को हानि :-** समुद्री जीवों की मृत्यु और जहाजों को प्लास्टिक से क्षति होने पर मछली पालन उद्योग को नुकसान होता है।

♦ **पर्यटन प्रभावित :-** गंदे समुद्रतट और सार्वजनिक स्थलों पर फैला प्लास्टिक कचरा पर्यटकों को हतोत्साहित करता है।

♦ **स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ :-** प्लास्टिक जनित बीमारियों से स्वास्थ्य पर आर्थिक दबाव बढ़ता है।

प्लास्टिक प्रदूषण रोकने के उपाय

1. **सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध :-** सरकारों को सख्त कानून बनाकर सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना चाहिए और इसके विकल्पों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

> **प्लास्टिक, जो आज हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। चाहे वह बोतल हो, बैग हो, पैकेजिंग हो या खिलौने- हर जगह प्लास्टिक की मौजूदगी स्पष्ट दिखाई देती है। लेकिन यह सुविधा अब हमारे पर्यावरण के लिए अभिशाप बनती जा रही है। प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक संकट का रूप ले चुका है, जिससे पृथ्वी का हर जीव, हर पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित हो रहा है।**

2. **वैकल्पिक सामग्री का उपयोग :-** कागज, जूट, कपड़े, बांस और बायोडिग्रेडेबल पदार्थों से बने उत्पादों को बढ़ावा देना चाहिए।

3. **जन जागरूकता अभियान :-** स्कूलों, कॉलेजों और मीडिया के माध्यम से जनता को शिक्षित करना आवश्यक है कि प्लास्टिक का सीमित उपयोग करें।

4. **रिसाइक्लिंग और पुन: उपयोग :–** उपयोग की गई प्लास्टिक वस्तुओं को पुनः उपयोग में लाना और पुनर्चक्रण की प्रक्रिया को सरल व सुलभ बनाना।

5. **साफ-सफाई और कचरा प्रबंधन :-** नगर निगमों और पंचायतों को मिलकर ठोस कचरा प्रबंधन प्रणाली को मजबूत करना चाहिए जिससे प्लास्टिक पृथक कर नष्ट किया जा सके।

6. **"3R" सिद्धांत को अपनाना :-** **Reduce** (कम करना), **Reuse** (पुनः प्रयोग), **Recycle** (पुनर्चक्रण) को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना।

सरकारी प्रयास और वैश्विक पहल : भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 2019 से सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने का संकल्प लिया।

♦ स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्लास्टिक कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता दी गई।

♦ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा "Beat Plastic Pollution" नामक अभियान चलाया जा रहा है।

♦ कई देशों ने प्लास्टिक बैग टैक्स, प्रतिबंध और रिसाइक्लिंग नियम लागू किए हैं।

प्लास्टिक एक ऐसा संकट बन चुका है जिससे निपटने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर मिलकर प्रयास करने होंगे। आज आवश्यकता है कि हम अपनी जीवनशैली में बदलाव लाएँ, और प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए प्लास्टिक के वैकल्पिक विकल्पों को अपनाएँ। यदि समय रहते हमने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक प्रदूषित और विषैली पृथ्वी पर जीने को मजबूर होंगी। ■

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन

पर्यावरण पर ध्यान केंद्रित करना क्यों महत्वपूर्ण है?

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद्

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पंच परिवर्तन व्यक्तियों, समाजों, व्यवसायों, निगमों और सरकारों के लिए मानवता और राष्ट्रीय एवं वैश्विक कल्याण के सभी पहलुओं में भारत की महानता को पुनर्स्थापित करने हेतु कार्य करने हेतु पांच आवश्यक सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। ये पाँच बिंदु हैं– 1. स्व बोध 2. पर्यावरण 3. सामाजिक समरसता 4. नागरिक शिष्टाचार 5. पारिवारिक प्रबोधन। यह लेख पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर चर्चा करता है।

भारत का प्रकृति के साथ शांतिपूर्वक रहने का एक समृद्ध इतिहास और अभ्यास रहा है। हमारे राष्ट्र की मूल्य प्रणाली में प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान है। ऐतिहासिक रूप से, प्रकृति और वन्यजीवों की रक्षा सनातन धर्म का एक मूलभूत तत्व रही है, जो लोगों के दैनिक जीवन में अभिव्यक्त होती है और वैदिक साहित्य, लोककथाओं, धार्मिक मान्यताओं, कला और संस्कृति द्वारा समर्थित है। 2000 साल से भी पहले, भारतीय लोकाचार ने पारिस्थितिकी के कुछ आवश्यक विचारों, जैसे कि सभी जीवों के अंतर्संबंध और परस्पर संबद्धता, की कल्पना की और उन्हें एक प्राचीन ग्रंथ, ईशावास्योपनिषद में प्रस्तुत किया। इसमें कहा गया है– 'परम शक्ति ने इस ब्रह्मांड की रचना अपनी सभी रचनाओं के कल्याण के लिए की है। परिणामस्वरूप, प्रत्येक जीवित प्राणी को अन्य प्रजातियों के साथ घनिष्ठ संबंध में इस व्यवस्था का सदस्य होने के लाभों को प्राप्त करना सीखना चाहिए।' 'कोई भी प्रजाति दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकती।' यह सतत् विकास का एक प्रमुख सिद्धांत है। हम गैर–जिम्मेदार उपभोग का सहारा लिए बिना भी प्रगति, धन और कल्याण के समान स्तर तक पहुँच सकते हैं। इस दृष्टिकोण में, भारत अपने समृद्ध पारंपरिक अतीत और आधुनिकता के बीच एक 'समन्वय' बनाए रखना चाहिए और साथ ही हानिकारक पर्यावरणीय प्रभावों को न्यूनतम करना है।

आज पर्यावरण संरक्षण क्यों आवश्यक है? : दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक, भारत एक दोराहे पर खड़ा है। एक ओर, आर्थिक विकास की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि लाखों लोग अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए विकास पर निर्भर हैं। दूसरी ओर, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसे पर्यावरणीय मुद्दों से निपटने की

सख्त जरूरत है। भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ चिंताजनक गति से बढ़ रही हैं। ये पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर और व्यापक हैं, जिनमें दमघोंटू शहरी वायु प्रदूषण से लेकर व्यापक जल प्रदूषण और बढ़ता मृदा अपरदन शामिल है।

ये चुनौतियां न केवल लाखों भारतीयों के स्वास्थ्य और आजीविका को खतरे में डालती हैं, बल्कि दीर्घकालिक विकास और आर्थिक वृद्धि में भी बाधा डालती हैं। ये आय और सामाजिक असमानता को बढ़ाती हैं, जिससे लोग तेजी से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे उन शहरों में चुनौतियाँ और बढ़ जाती हैं जहाँ विकास के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का अभाव है। भारत में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन बहुत अधिक है और यह प्राकृतिक आपदाओं और चरम मौसम की घटनाओं के प्रति संवेदनशील है। इसकी जनसंख्या और आर्थिक वृद्धि, दोनों ने पर्यावरणीय क्षरण में योगदान दिया है। विभिन्न सरकारों, समग्र समाज और नागरिकों को पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए।

मृदा स्वास्थ्य खतरे में : संसदीय समिति के अध्ययनों के अनुसार, रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के कारण मृदा स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हो रही है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम (एनपीके) उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग भारत की मिट्टी को नुकसान पहुँचा रहा है। एनपीके के उपयोग का अनुशंसित अनुपात 4:2:1 है, लेकिन वास्तविक उपयोग 31:4.8:0.1 हो गया है।

दैनिक जीवन में प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग भी मृदा और मानव स्वास्थ्य को भारी नुकसान पहुँचा रहा है।

स्वास्थ्य संबंधी परिणाम : खराब मृदा स्वास्थ्य का कृषि उत्पादकता और खाद्य गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है। मृदा से निकलने वाला रासायनिक अपवाह जल स्रोतों को प्रदूषित करता है, जिससे जलीय वन्यजीवों को खतरा होता है। मृदा क्षरण कृषि स्थिरता और खाद्य सुरक्षा को खतरे में डालता है।

कृषि में, प्रौद्योगिकी जल दक्षता बढ़ाने और कृषि तकनीकों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में मदद कर रही है। ड्रिप सिंचाई, परिशुद्ध खेती और जलवायु-प्रतिरोधी फसल प्रकार किसानों को बदलते मौसम के पैटर्न के अनुकूल होने और अपने संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, जैविक खेती और टिकाऊ कीट नियंत्रण में प्रगति, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान को कम करने में मदद कर रही है।

चिंताजनक जल प्रबंधन सूचकांक : नीति आयोग द्वारा प्रकाशित व्यापक जल प्रबंधन सूचकांक जल प्रबंधन प्रक्रियाओं की एक निराशाजनक तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह उचित जल संरक्षण और प्रबंधन उपायों की अनिवार्य आवश्यकता पर बल देता है।

भारत का प्रकृति के साथ शांतिपूर्वक रहने का एक समृद्ध इतिहास और अभ्यास रहा है। हमारे राष्ट्र की मूल्य प्रणाली में प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान है। ऐतिहासिक रूप से, प्रकृति और वन्यजीवों की रक्षा सनातन धर्म का एक मूलभूत तत्व रही है, जो लोगों के दैनिक जीवन में अभिव्यक्त होती है और वैदिक साहित्य, लोककथाओं, धार्मिक मान्यताओं, कला और संस्कृति द्वारा समर्थित है।

जल संकट की चुनौतियाँ: भूजल का ह्रास और प्रदूषण जल सुरक्षा को खतरे में डालते हैं। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और पानी का बेतहाशा उपयोग स्थिति को और बिगाड़ देता है। जलवायु परिवर्तन सूखे को बढ़ाता है और मीठे पानी की आपूर्ति को सीमित करता है।

समग्र जल नीतियों की आवश्यकता :

स्थायी जल उपयोग के लिए एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन आवश्यक है। वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। जन जागरूकता पहल जल संरक्षण प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित कर सकती हैं।

बदलाव के लिए जन प्रयास : जन मांग और जागरूकता राजनीतिक बहस को पर्यावरणीय मुद्दों की ओर मोड़ सकती है। पर्यावरण नीति परिवर्तन को आगे बढ़ाने में मतदाताओं का प्रभाव महत्वपूर्ण है।

'सतत विकास' का वास्तव में क्या अर्थ है? : सतत विकास एक विकास प्रतिमान है जो भावी पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता को जोखिम में डाले बिना आज की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है- आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और पर्यावरण संरक्षण। भारत जैसे विशाल जनसंख्या और तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए, सतत् विकास प्राप्त करने के लिए औद्योगीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास की आवश्यकता को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी के साथ संतुलित करना आवश्यक है।

भारत के पर्यावरणीय संकट से

ISSN No. 2581-3528

निपटने के लिए केंद्र सरकार के प्रयास-

प्रधानमंत्री का वैश्विक संदेश : 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' का नारा सामूहिक उत्तरदायित्व पर जोर देता है। ऐसी वैश्विक प्रतिबद्धताओं के लिए घरेलू नीतिगत समन्वय आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम : भारत के 102 सबसे प्रदूषित शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए शुरू किया गया। अगले पाँच वर्षों के भीतर, इसका लक्ष्य पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) के स्तर में 20–30 प्रतिशत की कमी लाना है।

स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) : खुले में शौच को कम करके और स्वच्छता को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय स्वच्छता में सुधार करता है। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और जल उपचार पर ध्यान केंद्रित करता है।

राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन : रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करने वाली सतत् कृषि तकनीकों को प्रोत्साहित करता है। प्राकृतिक संसाधनों और जैविक कृषि पद्धतियों के सतत उपयोग को बढ़ावा देता है।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना : एक समन्वित राष्ट्रीय रणनीति के माध्यम से जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कार्य योजनाएँ और रणनीतियाँ विकसित करता है। ऊर्जा दक्षता, जल, सतत् आवास और सौर ऊर्जा जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित है।

स्वच्छ गंगा मिशन (नमामि गंगे) : प्रदूषण कम करके और जैव विविधता को संरक्षित करके, यह गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है। यह जन भागीदारी, नदी तट विकास और सीवेज उपचार संयंत्रों पर केंद्रित है।

भारत को एक ऐसे विकास पथ पर चलना होगा जो पर्यावरणीय क्षरण को कम करते हुए जीवन स्थितियों में सुधार को प्राथमिकता दे। भारत कम से कम दो क्षेत्रों में नवाचारों के साथ इस क्षमता का लाभ उठा सकता है– ऊर्जा और संरक्षण।

निष्कर्ष : यद्यपि सरकार सतत् विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन नागरिकों और व्यवसायों की भागीदारी भी आवश्यक है। व्यक्ति हरित जीवनशैली अपनाकर, जैसे कचरा कम करना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, जल संरक्षण और ऊर्जा–कुशल वस्तुओं का उपयोग करके, स्थिरता को बढ़ावा देने में योगदान दे सकते हैं। टिकाऊ फैशन, पर्यावरण–अनुकूल उत्पादों और पादप–आधारित आहारों की बढ़ती लोकप्रियता, उपभोक्ताओं की रुचि में पर्यावरण के प्रति जागरूक विकल्पों की ओर रुझान को दर्शाती है।

भारत का सतत् विकास की ओर संक्रमण एक जटिल लेकिन महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। आर्थिक विस्तार और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए सरकार, निगमों और नागरिकों के बीच सहयोग की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, हरित प्रथाओं को लागू करके और सोच–समझकर निर्णय लेकर, भारत आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकता है। ■

ISSN No. 2581-3528

डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता : पर्यावरण जागरण की एक समर्पित साधिका

डॉ. आभा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में पृथ्वी को माता माना गया है, परंतु आज यह माता शोषण, प्रदूषण और उपेक्षा का शिकार है। जलवायु परिवर्तन, जल और वायु प्रदूषण, प्लास्टिक संकट जैसे पर्यावरणीय मुद्दे केवल वैज्ञानिक शोध या अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि आम जनजीवन को प्रभावित करने वाले गंभीर संकट बन चुके हैं। ऐसे समय में जब समाज का एक बड़ा वर्ग समस्या को केवल "सरकार की जिम्मेदारी" मानकर किनारा कर लेता है, वहीं कुछ जागरूक नागरिक अपने कर्म, समर्पण और सेवा से इस संकट का समाधान खोजने निकल पड़ते हैं। नोएडा सेक्टर 70 की पैन ओएसिस सोसायटी निवासी डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता का व्यक्तित्व ऐसी ही प्रेरणा और परिवर्तन का अनुपम समन्वय है जो विगत कई वर्षों से स्वच्छता, प्लास्टिक उन्मूलन, वृक्षारोपण और पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

शिक्षा से समाजसेवा की ओर : एक जागरूक शिक्षिका की यात्रा : डॉ. शुभ्रा गर्ग का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ। प्रारंभ से ही उन्हें अध्ययन, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विरासत में मिली। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से वाणिज्य में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और फिर 1986 से 1999 तक पी. सी. बंगला कॉलेज हाथरस और 1999 से 2020 तक गाजियाबाद के एम.एम.एच. पीजी कॉलेज में वाणिज्य विषय की प्रवक्ता रहीं। वे एक शिक्षिका थीं, परंतु उनके व्यक्तित्व की परिधि केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहीं। विद्यार्थी जीवन से ही समाज की समस्याएँ उन्हें आंदोलित करती थीं। पढ़ाते समय भी वे विद्यार्थियों को सामाजिक चेतना और जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाती थीं। यह शिक्षा अब समाज में उनके अभियान के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल रही है।

कोविड काल : सेवा, साहस और जागरूकता की मिसाल : साल 2020 का कोविड महामारी काल भारत सहित पूरी दुनिया के लिए कठिन समय था। लेकिन जहां चारों ओर भय, असुरक्षा और असहायता की भावना व्याप्त थी, वहीं डॉ. शुभ्रा गर्ग ने इस अवसर को सेवा और जागरूकता का यज्ञ बना दिया। उन्होंने नोएडा की सोसाइटीज में जाकर हाइजीन और सैनिटेशन के प्रति लोगों को जागरूक किया। उन्होंने स्वयं मास्क, सैनिटाइजर और सफाई के साधनों का वितरण किया, लोगों को घरों की सफाई, हाथ धोने की विधि, कीटाणु–निरोधी घरेलू उपाय आदि के बारे में व्यावहारिक रूप से प्रशिक्षण दिया। उन्होंने इस कठिन समय में जो साहस दिखाया, वह न केवल महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि राष्ट्रीय सेवाभाव की एक उत्कृष्ट मिसाल भी है।

इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन से जुड़ाव : पर्यावरण संरक्षण को संगठित दिशा : डॉ. शुभ्रा अपने प्रयासों को और अधिक संगठित रूप देने के लिए सन् 2022 में सेव मदर अर्थ और इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन से जुड़ीं। उन्होंने पैन ओएसिस सोसायटी सेक्टर 70 नोएडा में स्वयंसेवकों की एक टीम बनाई और एक जनजागरण अभियान प्रारंभ किया। कभी नुक्कड़ नाटक के माध्यम से और कभी वर्कशॉप के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। उन्होंने घर–घर जाकर लोगों को गीले और सूखे कचरे को अलग करने की प्रक्रिया समझाई। यह कार्य केवल समझाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने प्रत्येक परिवार को व्यवहार में लाने हेतु प्रशिक्षित भी किया। आज उनके नेतृत्व में इस सोसायटी के 2200 से अधिक परिवार और लगभग 4000 नागरिक 'प्लास्टिक मुक्त समाज' की

दिशा में सक्रिय हैं। इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन ने अब तक 2,70,000 किलोग्राम प्लास्टिक और सूखे कचरे को रिसाइकल कराकर बेंच, गमले और कूड़ेदान जैसे उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करके कचरे का उचित निपटान सुनिश्चित किया है, और इसमें से 13,000 किलोग्राम डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता के नेतृत्व में एकत्र किया गया, जो उनकी प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता का सशक्त प्रमाण है। यह उपलब्धि अपने आप में उल्लेखनीय है, क्योंकि यह कार्य न केवल जागरूकता से जुड़ा था, बल्कि व्यवहार परिवर्तन और सतत क्रियान्वयन का भी परिणाम था।

रिफ्यूज, रिड्यूस, रियूज, रिसाइकिल का पर्यावरणीय मंत्र : डॉ. शुभ्रा का जीवन दर्शन उनके पर्यावरणीय मंत्र 'रिफ्यूज, रिड्यूस, रियूज, रिसाइकिल अर्थात त्यागो, घटाओ, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण करो' में परिलक्षित होता है। वे मानती हैं कि जब तक हर नागरिक अपने जीवन में इन चार सिद्धांतों को नहीं अपनाता, तब तक स्वच्छता और पर्यावरण रक्षा केवल योजनाओं में सीमित रह जाएँगी। वे लोगों को प्लास्टिक वस्तुओं का त्याग करना सिखाती हैं, पुनः उपयोग योग्य थैले, बर्तन, बोतल आदि अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं, और किचन वेस्ट से कंपोस्ट खाद बनाना सिखाकर घर को ही एक मिनी पर्यावरण केंद्र में बदलने की प्रेरणा देती हैं।

सामाजिक सहभागिता और वृक्षारोपण की पहल : डॉ. शुभ्रा गर्ग का मानना है कि सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक प्रयास से आता है। इसी सोच के तहत वे अपनी सोसायटी में समय–समय पर पर्यावरण सम्मेलन आयोजित करती हैं, जिनमें प्लास्टिक प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, हरित ऊर्जा और कचरा प्रबंधन जैसे विषयों पर विशेषज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों के बीच संवाद होता है। उनके सम्मेलनों से अनेक नागरिक न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को समझते हैं, बल्कि समाधान का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित होते हैं। वे 'ग्रीन योर नेबरहुड (GYN)' नामक एक गैर–सरकारी संगठन से भी जुड़ी हुई हैं, जो वृक्षारोपण, स्वच्छता और जनसेवा के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाता है। शुभ्रा जी स्वयं भी अपनी टीम के साथ वृक्षारोपण अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। वे यह मानती हैं कि– "पेड़ लगाना केवल पर्यावरण की सेवा नहीं, भावी पीढ़ी के लिए एक उपहार है।" उन्होंने अब तक नोएडा और आसपास के कई स्थानों पर छायादार पौधों का रोपण कराया है और उसकी निरंतर देखभाल के लिए स्थानीय लोगों को ज़िम्मेदारी से जोड़ा है।

प्लास्टिक मुक्त भारत का सपना : डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता का लक्ष्य केवल नोएडा या एक सोसाइटी तक सीमित नहीं है। उनका सपना है – 'एक पूर्णतः प्लास्टिक मुक्त भारत' वे मानती हैं कि यह सपना तभी साकार होगा जब नीति और व्यवहार दोनों स्तरों पर क्रांति लाई जाए। उनका मानना है कि – "स्वच्छता केवल सफाईकर्मी की जिम्मेदारी नहीं, हर नागरिक का नैतिक धर्म है।" उनका यह सपना प्रधानमंत्री के 'स्वच्छ भारत' अभियान के मूल भाव को स्थानीय स्तर पर क्रियान्वयन देने वाला प्रयास है।

संघ दृष्टिकोण से डॉ. शुभ्रा का योगदान : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सदैव से पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति पूजन को समर्पित, आत्मनिर्भरता और जन सहभागिता आधारित समाज निर्माण में विश्वास रखता है। ग्वालियर में वर्ष 2019 में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा द्वारा लिए गए निर्णयों में संघ का समाज की सहभागिता से पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में तीन प्रमुख क्षेत्रों – जल संरक्षण और जल प्रबंधन, वृक्षारोपण और प्लास्टिक तथा थर्मोकोल जैसी अन्य अजैव निम्नीकरणीय सामग्री के उपयोग को समाप्त करने में पहल किए जाने का निर्णय महत्वपूर्ण था। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संबंधी चिंताओं के समाधान हेतु एक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया जाना था। इसी क्रम में संघ दृष्टि से 'पर्यावरण विभाग की स्थापना हुई और सामाजिक सहभागिता का जन –जागरण शुरू हो गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के आलोक में पंच परिवर्तन के ध्येय में भी पर्यावरण को दूसरे ही स्थान पर रखा गया है। अगस्त माह के अंतिम सप्ताह में 'प्रकृति वंदन' के आयोजन इसी अभियान का हिस्सा हैं। इतिहास साक्षी है कि वैश्विक चिंताओं के समाधान असंख्य बार स्थानीय भू–सांस्कृतिक दृष्टिकोण और पारंपरिक ज्ञान में निहित होते हैं। ऐसे में डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता की जीवनशैली "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" के भाव को चरितार्थ करती है। वे पर्याप्त सक्रियता से जन–जागरण में जुटी हैं।

परिवर्तन की धुरी बनती एक साधिका : आज जब भारत अमृत काल में प्रवेश कर चुका है और 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य निर्धारित कर चुका है, तब ऐसे व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जो विकास को केवल आर्थिक आंकड़ों से नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के संतुलन से मापें। डॉ. शुभ्रा गर्ग गुप्ता इस दृष्टि की एक मूर्त प्रतिमा हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि "परिवर्तन का बीज छोटे प्रयासों में होता है, जो यदि सतत रहे, तो क्रांति बनता है।" वे नारी शक्ति, सेवा भाव, पर्यावरणीय चेतना और राष्ट्रीय जिम्मेदारी इन सबका विलक्षण संगम हैं। आज का भारत ऐसे ही नागरिकों की प्रतीक्षा कर रहा है, जो स्वयं को नहीं, बल्कि 'राष्ट्र को केंद्र' में रखकर कार्य करें। डॉ. शुभ्रा इस राष्ट्रवादी पर्यावरण चेतना की प्रखर उदाहरण हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और समरसता

एन. के. सिन्हा
पाठ्य पुस्तक एवं सामग्री लेखक
(अंतरराष्ट्रीय ओलंपियाड एकेडमी : नई दिल्ली)

समरसता' या 'सामरस्य' का शाब्दिक अर्थ है–समरस होने का भाव, अर्थात् समान रस या भावों से युक्त होना। यह वह स्थिति है जहां भावों और विचारों में समानता, सामंजस्य और एकरूपता विद्यमान हो। सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग सामाजिक संदर्भों में होता है, जहां समाज के सभी वर्गों के मध्य परस्पर समानता और सौहार्द की भावना हो। समाज के सभी वर्गों, जातियों, धर्मों और लिंगों के लोग बिना किसी भेदभाव के एक–दूसरे को अपने समान समझें– यही समरसता है।

समरसता का दार्शनिक आधार : उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ने अपने संकल्प से इस ब्रह्मांड की रचना इस भाव के साथ की– "एकोऽहं बहुस्याम" अर्थात् "मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ।" इस प्रकार उसने एकता में अनेकता का संदेश दिया। सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों को समूल समाप्त कर एक समतामूलक, समरस और सशक्त समाज की परिकल्पना को साकार किया जाए। क्योंकि हम सब एक ही परमात्मा की संतान हैं– "वयं अमृतस्य पुत्राः"।

संस्कृत साहित्य में समरसता की भावना को दर्शाते कई श्लोक मिलते हैं, जैसे–

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।"

(अर्थात् "यह मेरा है, वह पराया है– ऐसी सोच तुच्छ बुद्धि वालों की होती है। उदार चरित्र वाले संपूर्ण पृथ्वी को ही परिवार मानते हैं।")

"यथा चित्तं तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायांश्च साधूनामेकरूपता।।"

(अर्थात् "जैसा मन, वैसा वचन और जैसी वाणी, वैसा ही कर्म। मन, वाणी और क्रिया में एकरूपता होना ही साधु प्रवृत्ति का लक्षण है।")

इस प्रकार समरसता केवल एक सामाजिक अवधारणा न होकर एक गहन भावनात्मक, दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना का नाम है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और समरसता : भारत विविधताओं से भरा हुआ एक महान राष्ट्र है, जहां भाषा, जाति, धर्म, संस्कृति, पहनावा, भोजन आदि में असंख्य अंतर होते हुए भी एकता की भावना विद्यमान रही है। यही हमारी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय पहचान है।

परंतु कभी–कभी यही विविधताएं विघटन और सामाजिक विषमता का कारण भी बन जाती हैं। ब्रिटिश शासनकाल में हम इसके दुष्परिणाम भुगत चुके हैं। वर्तमान में भी देश में धर्मनिरपेक्षता की आड़ में तुष्टिकरण की राजनीति और विघटनकारी शक्तियां सामाजिक समरसता को चुनौती दे रही हैं।

ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) विश्व का एकमात्र ऐसा संगठन है, जिसका मूल उद्देश्य ही एक संगठित, समरस

ISSN No. 2581-3528

और संस्कारित राष्ट्र का निर्माण रहा है। संघ की शाखाओं में सामाजिक समरसता, अनुशासन, सेवा तथा राष्ट्रभक्ति पर विशेष बल दिया जाता है। संघ के विविध सेवा प्रकल्प समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़कर समरसता, सेवा, सहयोग और राष्ट्रप्रेम को बढ़ावा देते हैं।

पंच परिवर्तन और समरसता : समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप संघ ने समय-समय पर अपनी कार्यशैली एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन किया है। इसी क्रम में संघ द्वारा "पंच परिवर्तन" की व्यापक और बहुआयामी परिकल्पना प्रस्तुत की गई है, जो आधुनिक भारत की सामाजिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करती है।

इनमें सामाजिक समरसता को केंद्रीय स्थान दिया गया है। इसके लिए समाज के सभी समुदायों में पारस्परिक प्रेम, संवाद, भाईचारा और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षा, संवाद, सहभागिता और सेवा कार्यों के माध्यम से जातिगत भेदभाव समाप्त कर सामाजिक एकीकरण को बल दिया जा सकता है!

संघ के कार्यक्रम और प्रयास : संघ प्रारंभ से ही सामाजिक समरसता पर विशेष बल देता आया है। इसके छह उत्सवों में रक्षाबंधन सामाजिक समरसता का प्रतीक माना जाता है। इसके अतिरिक्त समरसता सहभोज, समरसता खिचड़ी आदि कार्यक्रम समाज में समभाव और समरसता को बढ़ावा देते हैं।

संघ के कार्यक्रमों में ऋग्वेद से लिया गया श्लोक "समानी वा आकूतिः..." संगठन मंत्र के रूप में गाया जाता है-

"समानी वा आकूतिः समानाः हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।"

(अर्थः हमारी आकांक्षाएं, हृदय और बुद्धि समान हों, ताकि हम सब मिलकर सामंजस्यपूर्वक जीवन जी सकें।)

इसके साथ ही संघ का कल्याण मंत्र भी समरसता का उद्घोष करता है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्"

संघ जाति, धर्म, लिंग या अन्य सामाजिक विभाजनों के आधार पर होने वाले भेदभावों का विरोध करता है। संघ की सेवा भारती, विद्या भारती, एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम, विवेकानंद केंद्र जैसी संस्थाएं वंचित, दलित और जनजातीय वर्गों के बीच जाकर उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता के माध्यम से मुख्यधारा से जोड़ती हैं।

छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, पूर्वोत्तर राज्यों में चल रहे एकल विद्यालयों में जनजातीय बच्चों को आधुनिक एवं संस्कारित शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिससे सामाजिक समरसता को मूर्त रूप मिल रहा है।

संघ के आद्य सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार स्वयं अस्पृश्यों के साथ सहभोज के आयोजक रहे। तृतीय सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस ने संघ शिविरों में कहा था-

"संघ वर्ण व्यवस्था को नहीं मानता और किसी भी प्रकार की ऊंच-नीच की असमानता को अस्वीकार करता है।"

संघ द्वारा समय-समय पर व्याख्यान, कार्यशालाएं, प्रकाशन आदि के माध्यम से सामाजिक समरसता को लेकर जनजागरण किया जाता रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसे समरस समाज की परिकल्पना को साकार करने हेतु सतत प्रयत्नशील है, जहां न कोई ऊंचा हो, न कोई नीचा; न कोई भेदभाव हो, न कोई तिरस्कार। सब एक समान हों- समान अधिकार, समान अवसर, समान सम्मान।

जब हम "एकात्म मानव दर्शन" को आत्मसात करते हुए, "हम सब एक हैं" की भावना के साथ कार्य करेंगे, तभी एक समरस, संगठित और सशक्त राष्ट्र की नींव रखी जा सकेगी।

हमें मिलकर एक ऐसे अखंड भारत के निर्माण में योगदान देना है जहां हर नागरिक राष्ट्र के प्रति समर्पित हो और हर वर्ग, समुदाय, भाषा व संस्कृति के लोग परस्पर समरसता के सूत्र में बंधकर साथ चलें। ■

ISSN No. 2581-3528

स्वस्थ पर्यावरण : एक स्वच्छ भारत की नींव

अलका रानी
सहायक अध्यापिका, उच्च प्राथमिक विद्यालय
रामनगर, अमरोहा

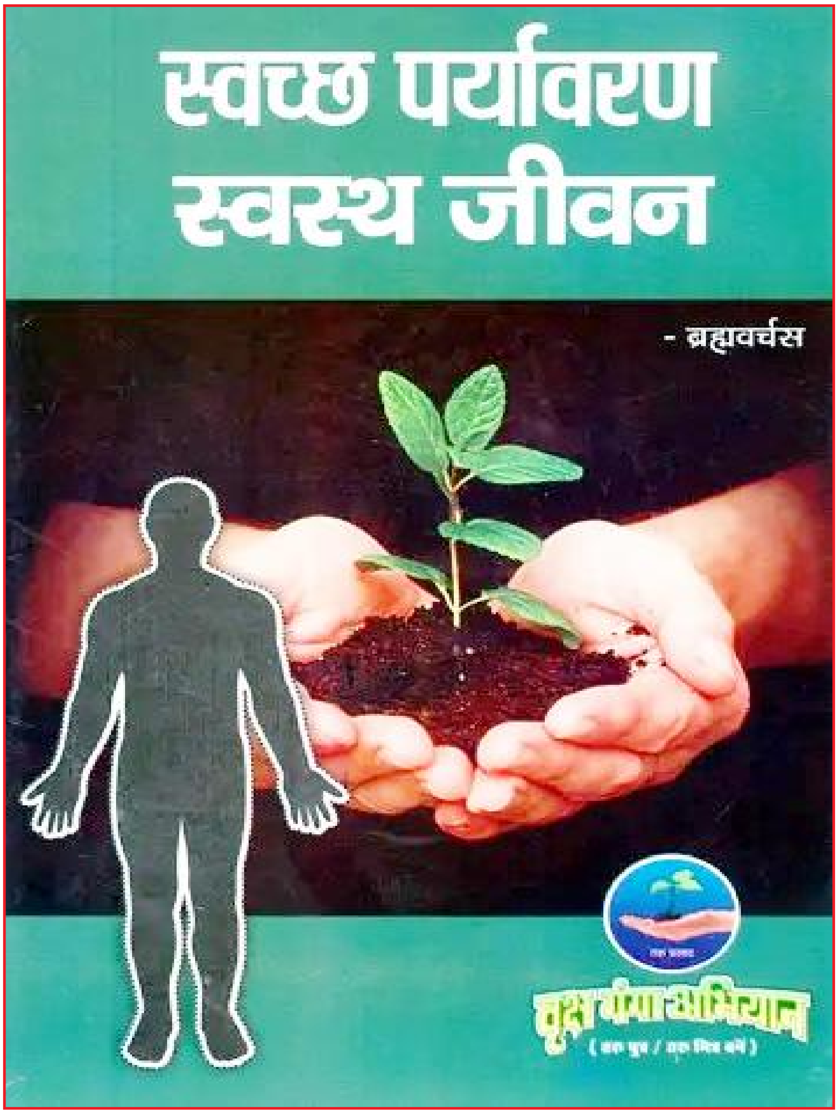

पर्यावरण केवल हमारे चारों ओर फैला प्राकृतिक आवरण नहीं है, बल्कि यह हमारा जीवनदाता, संसाधनों का स्रोत और आधारभूत संरचना है। एक स्वस्थ पर्यावरण न केवल मनुष्य के जीवन को सुरक्षित और समृद्ध बनाता है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय विकास का भी मूल स्तंभ होता है। जब हम स्वच्छ भारत की बात करते हैं, तो उसका वास्तविक अर्थ तभी साकार होता है जब हमारा पर्यावरण भी स्वस्थ और संतुलित हो। वर्तमान समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ और पारिस्थितिकी तंत्र की असंतुलित स्थिति ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वस्थ पर्यावरण के बिना 'स्वच्छ भारत' की कल्पना अधूरी है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि हम पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए भारत को स्वच्छ, सुंदर और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करें।

स्वस्थ पर्यावरण की परिभाषा :- स्वस्थ पर्यावरण का आशय है एक ऐसा वातावरण जो प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर, प्रदूषण रहित, जैव विविधता से समृद्ध तथा मानव जीवन के लिए अनुकूल हो। इसमें शुद्ध वायु, स्वच्छ जल, उपजाऊ भूमि, हरियाली, स्वच्छ नदियाँ, संतुलित तापमान तथा पारिस्थितिक संतुलन शामिल है। जब ये सभी घटक उचित मात्रा में मौजूद रहते हैं और मानव गतिविधियाँ इनके साथ सामंजस्य बनाए रखती हैं, तब पर्यावरण को 'स्वस्थ' कहा जाता है।

स्वस्थ पर्यावरण और स्वच्छ भारत का संबंध

1. **स्वच्छता और स्वास्थ्य :-** स्वच्छता का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। खुले में शौच, अपशिष्ट का अनुचित निपटान, जल स्रोतों की गंदगी, प्लास्टिक प्रदूषण। ये सभी न केवल पर्यावरण को अस्वस्थ बनाते हैं बल्कि जन-स्वास्थ्य को भी खतरे में डालते हैं। स्वस्थ पर्यावरण इन रोगों से बचाव की पहली दीवार है।

2. **स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक प्रभाव :-** यदि एक गाँव या शहर पर्यावरणीय दृष्टि से स्वच्छ और हरित है, तो वह न केवल अपने नागरिकों के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित करता है, बल्कि वह पूरे राष्ट्र के लिए विकासशील मॉडल बनता है।

3. **आर्थिक उन्नति :-** स्वस्थ पर्यावरण कृषि, पर्यटन, ऊर्जा और उद्योग क्षेत्रों को लाभ पहुंचाता है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है। स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ी गतिविधियाँ जैसे कचरा प्रबंधन, पुनर्चक्रण

उद्योग, हरित भवन निर्माण इत्यादि रोजगार के नए अवसर भी पैदा करते हैं।

स्वास्थ्य पर्यावरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

1. **प्रदूषण :-** वायु, जल, मृदा और ध्वनि प्रदूषण हमारे पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। महानगरों की जहरीली हवा, गंदे नाले, प्लास्टिक और ई–कचरे का ढेर पर्यावरण को लगातार बीमार बना रहे हैं।

2. **वनों की कटाई :-** अत्यधिक शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जिससे न केवल हरियाली घट रही है बल्कि जैव विविधता भी संकट में पड़ गई है।

3. **जल स्रोतों का दूषित होना :-** नदियों में औद्योगिक कचरे का बहाव, घरेलू मलजल का सीधे गिरना, नालों की सफाई न होना आदि हमारे जल स्रोतों को गंदा कर रहे हैं।

4. **अत्यधिक प्लास्टिक उपयोग :-** सिंगल यूज़ प्लास्टिक का व्यापक प्रयोग हमारे पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है, जो सदियों तक नष्ट नहीं होता।

स्वच्छ भारत अभियान और पर्यावरण सुधार :- स्वच्छ भारत मिशन भारत सरकार की एक ऐतिहासिक पहल है, जिसकी शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर हुई। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य खुले में शौच मुक्त भारत बनाना, ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन करना, और नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाना है।

♦ स्वच्छ भारत अभियान ने स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में कई सकारात्मक प्रभाव डाले हैं।

♦ लाखों शौचालयों का निर्माण हुआ जिससे जल स्रोतों की सफाई और स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

♦ स्कूलों और सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता के नियमों को बढ़ावा मिला।

♦ कचरा पृथक्करण, कम्पोस्टिंग और रिसाइकलिंग को बढ़ावा मिला।

♦ नगर निगम और ग्राम पंचायतों की जिम्मेदारियाँ बढ़ीं और जागरूकता आई।

स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में उठाए गए अन्य प्रयास

1. **बेटी बचाओ, पेड़ लगाओ अभियान :-** बेटी के जन्म पर पेड़ लगाने की परंपरा को प्रोत्साहित किया गया जिससे पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक सुधार दोनों को बल मिला।

2. **राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण** (NGT) :– NGT ने विभिन्न प्रदूषणों पर अंकुश लगाने हेतु सख्त निर्देश दिए हैं जैसे औद्योगिक कचरा प्रबंधन, निर्माण कार्यों में धूल नियंत्रण आदि।

3. **बायोगैस, सौर ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहन :-** पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के स्थान पर हरित ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देकर वायु प्रदूषण में कमी लाई जा रही है।

> **वर्तमान समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ और पारिस्थितिकी तंत्र की असंतुलित स्थिति ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वस्थ पर्यावरण के बिना 'स्वच्छ भारत' की कल्पना अधूरी है। अत: यह आवश्यक हो गया है कि हम पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए भारत को स्वच्छ, सुंदर और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करें।**

4. **प्लास्टिक प्रतिबंध :-** कई राज्यों ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया है और कागज, कपड़े, जूट के बैग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

स्वस्थ पर्यावरण के लिए नागरिकों की भूमिका :- सरकार के प्रयास तभी सफल होंगे जब नागरिक अपनी जिम्मेदारी समझें। प्रत्येक व्यक्ति को निम्नलिखित कार्यों के प्रति सजग होना चाहिए।

♦ घरों में कचरा पृथक्करण (ड्राई और वेट वेस्ट) करें।

♦ प्लास्टिक की जगह वैकल्पिक वस्तुओं का प्रयोग करें।

♦ सार्वजनिक स्थलों पर कचरा न फेंकें।

♦ वृक्षारोपण करें और पेड़ों की रक्षा करें।

♦ जल संरक्षण करें – जैसे रेन वाटर हार्वेस्टिंग।

♦ कार पूलिंग, साइकलिंग और सार्वजनिक परिवहन अपनाएँ।

शिक्षा और जनजागरण का महत्व :- विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। 'स्वच्छता ही सेवा है', 'ग्रीन कैंपेन', 'नो प्लास्टिक डे', 'वृक्ष महोत्सव', 'ग्रीन स्कूल' जैसी गतिविधियाँ छात्रों में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करती हैं।

भविष्य की दिशा : सतत विकास और हरित भारत :- स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में किए गए प्रयास तभी स्थायी होंगे जब हम सतत विकास (Sustainable Development) को अपनाएँ, जिसमें वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण भी किया जाए। हरित भारत (Green India) की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है जब हम 'कम उपभोग, अधिक पुनः उपयोग' की नीति अपनाएँ, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक का समन्वय करें और पर्यावरण को केवल उपयोग की वस्तु न समझकर जीवंत प्रणाली के रूप में आदर दें।

स्वस्थ पर्यावरण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व की अनिवार्यता है। यदि हमें स्वच्छ भारत का सपना साकार करना है तो हमें अपने आसपास के पर्यावरण को स्वस्थ, स्वच्छ और सजीव बनाना होगा। यह कार्य केवल सरकारों का नहीं, बल्कि हर नागरिक की भागीदारी से ही संभव होगा। प्रत्येक वृक्ष, हर बूंद जल, हर स्वच्छ स्थान। इस दिशा में एक छोटा–सा कदम भारत को सचमुच स्वच्छ और समृद्ध राष्ट्र बना सकता है। ■

ISSN No. 2581-3528

दिल्ली की झुग्गियों में बदलाव की नयी रोशनी देता 'लक्ष्य'

भावना भारद्वाज
शोध छात्र, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी, दिल्ली

डॉ. सुमंत शेखर
संस्थापक, लक्ष्य–ए सोसाइटी फॉर सोशल एंड एनवायरनमेंटल डेवलपमेंट

दिल्ली देश की राजधानी होने के साथ–साथ एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है। यहाँ समाज के हर वर्ग के लोग निवास करते है। गगनचुंबी इमारतों और उच्च वर्गीय समाज के आस–पास एक बेहद कम आय वाला वर्ग भी निवास करता है, इस वर्ग के लिए अपने मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा कर पाना उनकी क्षमता से बाहर होता है। दिल्ली के गगनचुंबी इमारतों वाले समाज में एक क्षेत्र द्वारका भी है। द्वारका में उच्च आय वर्ग के लोगों के बीच गोयला डेरी नाम की एक जगह है जहाँ कम आय वर्ग के लोगों की संख्या काफी अधिक है। गोयला डेरी क्षेत्र के विकास के लिए एक गैर–सरकारी संगठन (NGO) जिसका नाम है लक्ष्य–ए सोसाइटी फॉर सोशल एंड एनवायरनमेंटल डेवलपमेंट (Lakshya–A Society for Social and Environmental Development) समाज के वंचित वर्गों के जीवन में नयी रोशनी भरने का काम कर रहा है।

यह संगठन 2006 से शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में व्यावहारिक बदलाव लाने के लिए काम कर रहा हैं। इस संगठन के संस्थापक डॉ सुमंत शेखर से जब मैने विस्तृत चर्चा की तो उन्होंने अपने अनुभव, संगठन की सफलताओं और चुनौतियाँ के बारे में बताया। यह संवाद केवल एक संगठन के बारे में ही नहीं है अपितु दिल्ली में स्थित गोयला डेरी जैसे क्षेत्रों में रह रहे लोगों के संघर्ष और जीवन में परिवर्तन के बारे में है। इस क्षेत्र में बच्चे आर्थिक मजबूरी के कारण स्कूल जाने के बजाय कूड़ा इकट्ठा करने, घरेलू काम करने, अथवा छोटे–मोटे रोजगार के अवसरों में लिप्त रहते थे। ऐसे बच्चों के लिए स्कूल जाना मात्र एक स्वप्न जैसा था, जिसे लक्ष्य ने साकार रूप प्रदान किया है। लक्ष्य ने गोयला डेरी में आधार केंद्र की स्थापना की है जिसके माध्यम से वह बच्चों को बहुत सारी सेवाएं प्रदान करते हैं– जैसे कि ट्यूशन, किताबें, स्टेशनरी, कंप्यूटर शिक्षा और एक सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण। यह सभी सेवाएं मात्र पचास रुपए मासिक में प्रदान की जाती हैं। डॉ. सुमंत शेखर जी ने इस आधार केंद्र के बारे में बताया कि यहां का वातावरण बेहद सहज और सहायक है जहाँ बच्चे न केवल पढ़ते हैं बल्कि खेल, नृत्य, कहानी–वाचन, और चित्रकला भी करते हैं। डॉ. शेखर कहते हैं कि जहाँ पूरा विश्व पर्यावरण संरक्षण पर काम कर रहा है वहीं हमारे बच्चे भी इस विषय को लेकर सजग और जागरूक हैं, 'प्लास्टिक लाओ शिक्षा पाओ' अभियान से भारी संख्या में बच्चे जुड़े हैं। इस अभियान के तहत बच्चे अपने आसपास के इलाकों से प्लास्टिक इकट्ठा कर के लाते हैं जिसके बदले में हमारा संगठन बच्चों को मुफ्त शिक्षा और कुछ उपहार भी देता है।

डॉ. शेखर ने बताया कि इस संगठन का मिशन शिक्षा तक सीमित नहीं है, अपितु महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। 'वैदेही' कार्यक्रम के तहत स्थानीय महिला समूह गठित किये गए हैं, जिसमें महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, हस्तशिल्प और उपयोगी वस्त्रों की सिलाई के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन उत्पादों से स्थानीय महिलाओं को आय के श्रोत प्राप्त हुए हैं, जो कि महिला सशक्तिकरण के तरफ बढ़ते हुए कदमों को दिखता है। इसके साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए भी अभियान चलाया जा रहा है जिसमें प्लास्टिक कचरे के सही प्रबंधन के लिए 'प्लास्टिक लाओ थैला पाओ' अभियान के तहत महिलाओं को

जोड़ा जा रहा है । इस अभियान से गोयला डेरी क्षेत्र में प्लास्टिक प्रदूषण में कमी आई है, जो कि पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से एक आवश्यक कदम है।

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में 'लक्ष्य' एक प्रेरणा है, जो सामुदायिक भागीदारी और व्यवहारिक नवाचार को बढ़ा रहा है। 'प्लास्टिक लाओ, शिक्षा पाओ', 'प्लास्टिक लाओ, आलू पाओ', 'प्लास्टिक लाओ थैला पाओ' जैसे अभियान समुदाय के हर उम्र के लोगों को प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बच्चों से बुजुर्गों तक, सभी लक्ष्य के केंद्र पर प्लास्टिक लेकर आते हैं और बदले में स्टेशनरी, कपड़े के थैले, सब्जियां या अन्य उपयोगी वस्तुएं प्राप्त करते हैं। इन अभियानों ने केवल प्लास्टिक कचरे का निपटान आसान नहीं बनाया, बल्कि लोगों में पर्यावरण संरक्षण की भावना को भी जगाया है। इन अभियानों से न केवल समाज में पर्यावरण संरक्षण का व्यवहारिक समाधान निकल रहा है, बल्कि लोगों की सोच में भी क्रांतिकारी बदलाव आ रहे हैं। लक्ष्य ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी गंभीर कदम उठाए हैं। जैसे बच्चों के साथ किशोरियों और महिलाओं में माहवारी स्वच्छता और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना, हेल्थ शिविर और पोषण कार्यशाला का संचालन करना। कोविड–19 महामारी के समय भी संगठन ने विशेष रूप से काम किया जिसमें महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा मास्क और सुरक्षा किट का निर्माण किया गया और उसे जरूरतमंदों को उपलब्ध करवाया गया, जो न केवल आर्थिक मदद का स्रोत बनीं बल्कि स्वास्थ्य सुरक्षा की एक महत्वपूर्ण मिसाल भी बनीं।

डॉ सुमंत शेखर से बातचीत के दौरान उन्होंने 'चर्चा मंच' के बारे में बताया। इस मंच के माध्यम से 'लक्ष्य' संवाद के साथ–साथ जानकारी साझा करने के लिए सेमिनार, वेबिनार और कार्यशालाएं आयोजित करता है।

इससे सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार–विमर्श को बढ़ावा मिलता है। इस मंच से समाज के विभिन्न वर्गों में जागरूकता फैलाने और सहयोग बढ़ाने में भी मदद मिलती है। लोग इन चर्चाओं में भाग लेकर समाधान की ओर विस्तार से सोचने लगे हैं, जिससे समावेशी विकास की दिशा को मजबूती मिली है। यह मंच न केवल आम जनता बल्कि शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, और सामाजिक कार्यकर्ताओं को जोड़ता है, जिससे विभिन्न दृष्टिकोण और नवाचार सामने आते हैं।

डॉ. शेखर ने बताया कि इस संगठन का मिशन शिक्षा तक सीमित नहीं है, अपितु महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। 'वैदेही' कार्यक्रम के तहत स्थानीय महिला समूह गठित किये गए हैं, जिसमें महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, हस्तशिल्प और उपयोगी वस्त्रों की सिलाई के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन उत्पादों से स्थानीय महिलाओं को आय के श्रोत प्राप्त हुए हैं, जो कि महिला सशक्तिकरण के तरफ बढ़ते हुए कदमों को दिखता है।

संगठन ने न केवल लोगों की बुनियादी जरूरतों जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य का समाधान निकाला है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन प्रदान करने का रास्ता भी दिखाया है। यह संगठन केवल सामाजिक विकास के क्षेत्र में कदम नहीं उठाता बल्कि पर्यावरण जागरूकता और अभियान के लिए भी एक मिसाल बन रहा है। कचरा प्रबंधन और स्वच्छता कार्यक्रम स्थानीय समुदाय को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर रहे हैं। डॉ. शेखर से बातचीत से यह समझ आता है कि लक्ष्य जैसे संगठन देश के सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार बन रहे हैं। जहां शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के द्वारा केवल आर्थिक उत्थान ही नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समरसता और स्थायी विकास भी सुनिश्चित किया जा रहा है। ■

ISSN No. 2581-3528

स्वतंत्रता दिवस : चेतना, संकल्प और संयम का महापर्व

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

स्वतंत्रता कोई दिवस नहीं, आत्मा की वह आवाज है जो स्वत्व के बोध से जन्म लेती है। यह केवल राजसत्ता से मुक्ति नहीं, बल्कि विचारों की निर्भीकता, कर्मों की निष्कलुषता और आत्मबल की अखंड चेतना है। स्वतंत्रता दिवस वह पुण्यपर्व है, जब समूचा भारत अपनी स्मृतियों की वीथियों से गुजरते हुए उन अमर दीपों को नमन करता है, जिनकी लौ ने पराधीनता की रात को चीरकर स्वराज्य की प्रभा को जन्म दिया। स्वतंत्रता दिवस भारत की आत्मा का उत्सव है, जहां समूचे देश की धड़कनें एक सुर में 'स्व' की स्वतंत्रता का गान करती हैं। किन्तु इस उजियारे में एक और लौ जलती है– स्वनियंत्रण की, जो स्वतंत्रता की आत्मा है। जब राष्ट्र और नागरिक दोनों अपने स्व पर नियंत्रण रखते हैं, तभी स्वतंत्रता पुष्पित होती है। यह पर्व आत्मावलोकन का भी है, जहाँ जनगण अपने कर्तव्यों की गहराई में उतरते हैं और देशप्रेम को केवल भाव नहीं, व्यवहार बनाते हैं।

स्वतंत्रता का अर्थ केवल बाह्य बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि वह आंतरिक अनुशासन और आत्म–नियंत्रण है, जिसके बिना कोई भी राष्ट्र न तो दीर्घकालीन प्रगति कर सकता है, न ही आत्मगौरव का अनुभव कर सकता है। स्व–नियंत्रण का तात्पर्य है– अपनी इच्छाओं, संवेदनाओं और प्रतिक्रियाओं पर संयम, जहां स्व की प्रधानता हो किंतु वह दूसरों के हित और सामूहिक कल्याण से जुड़ी हो। जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र इस भावना से संचालित होते हैं, तब स्वतंत्रता का वास्तविक लाभ साकार होता है।

भारत एक ऐसा राष्ट्र रहा है, जिसकी जड़ों में संस्कृति, दर्शन और आध्यात्म की समृद्धता है। अनेक विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर शासन करने का प्रयत्न किया, किंतु भारत ने अपनी आत्मा को कभी पराधीन नहीं होने दिया। यह वही देश है, जिसने वेदों के उदात्त विचारों को जन्म दिया, जहां हिमालय जैसा विशाल हृदय और गंगा जैसी निर्मल चेतना प्रवाहित होती रही है। भारत के पास केवल भौगोलिक विस्तार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गहराई भी है। राम–भरत की भ्रातृ–प्रेम कथा हो या कृष्ण–सुदामा की मैत्री, भारत ने सदा संबंधों की मर्यादा, भावनाओं की गरिमा और कर्तव्यों की उत्कृष्टता का आदर्श प्रस्तुत किया है।

आज जब हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, तो यह केवल ध्वजारोहण, परेड और भाषणों तक सीमित न रहे। हमें यह भी स्मरण करना चाहिए कि यह दिन हमें अपनी आत्मा से जुड़ने, अपने कर्तव्यों को पुनः पहचानने और अपनी संकल्पशक्ति को सुदृढ़ करने का निमित्त है। भारत की स्वतंत्रता किसी एक वर्ग, धर्म या जाति की देन नहीं, अपितु यह वह सामूहिक चेतना थी, जिसमें किसान, मजदूर, शिक्षक, विद्यार्थी, महिला, पुरुष, संत, विचारक, सबने अपनी आहुति दी। गांधी के सत्याग्रह से लेकर भगत सिंह के बलिदान तक, नेहरू के स्वप्नों से लेकर पटेल की दृढ़ता तक, यह स्वाधीनता एक विशाल तपस्या का प्रतिफल है।

स्वतंत्रता का पर्व हमें यह भी स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता का मूल्य केवल अधिकारों में नहीं, बल्कि कर्तव्यों के निर्वहन में है। जो राष्ट्र अपने नागरिकों को केवल अधिकारों का ज्ञान देता है, किंतु कर्तव्य–बोध से दूर रखता है, वह

स्वतंत्रता को खोखला बना देता है। स्व–नियंत्रण का यही मर्म है कि व्यक्ति स्वयं अपने भीतर अनुशासन स्थापित करे, अपनी सीमाओं को पहचाने और आत्मकल्याण के साथ–साथ लोककल्याण की भावना से संचालित हो।

भारत आज वैश्विक मानचित्र पर एक उभरती हुई शक्ति है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल और सांस्कृतिक राजनय– हर क्षेत्र में उसने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। लेकिन इस विकास के साथ–साथ यदि हम आत्मसंयम, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को भूलते जाएं, तो यह स्वतंत्रता भी दिशाहीन हो जाएगी। आज आवश्यकता है कि हम एक ऐसे भारत की कल्पना करें, जहां नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हों, शासन पारदर्शिता और उत्तरदायित्व से चलाया जाए, और विकास की धारा गांव, गरीब, किसान और श्रमिक तक भी निर्बाध पहुंचे।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है – "सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लो हम। आजो यहां अजातशत्रु बन, सबका मित्र बना लो हम।" इस भावना में ही भारतीय स्वतंत्रता का मर्म छिपा है, जहां कोई पराया न हो, जहां किसी की उपेक्षा न हो, जहां धर्म–संप्रदाय के आधार पर भेद न हो, और जहां हर नागरिक को यह आत्मगौरव हो कि वह भारत माता का पुत्र है। यह आत्मगौरव तभी संभव है, जब हम स्वतंत्रता को केवल अधिकारों की पूर्ति न मानें, बल्कि एक दायित्वपूर्ण जीवन का पथ–प्रदर्शन भी मानें।

भारत एक भूमि नहीं, एक चेतना है। यह चेतना सदियों से जीवंत रही है, और यह भविष्य में भी तभी जागृत रहेगी जब हम स्वाधीनता के इस उत्सव को केवल समारोह न मानकर, एक जीवंत आत्मानुशासन का प्रतीक बनाएंगे। भारत माता एक मंदिर है, और हम उसके उपासक। उसकी सेवा, उसकी रक्षा, उसका उत्थान, यही हमारी पूज़ा, यही हमारा कर्म और यही हमारा धर्म होना चाहिए।

आज जब हम 15 अगस्त को राष्ट्रीय ध्वज को प्रणाम करते हैं, तो हमारे हाथों में केवल तिरंगा नहीं होता, बल्कि वह सभी स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा, सभी बलिदानों की गाथा और सभी अस्मिताओं की पहचान लिए होता है। वह ध्वज हमें यह भी कहता है कि अब तुम्हारा उत्तरदायित्व है, अब तुम्हें ही भारत बनाना है। शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, उद्यमिता, न्याय और समानता, इन सभी क्षेत्रों में राष्ट्र तभी आगे बढ़ेगा जब उसके नागरिक आत्म–नियंत्रण, आत्मावलोकन और आत्मबल से प्रेरित होंगे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था– "भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता–जागता राष्ट्रपुरुष है।" यह राष्ट्रपुरुष तभी सजीव रहेगा, जब उसके हृदय में नैतिकता, उसकी आत्मा में करुणा और उसकी गति में संकल्प होगा। स्वतंत्रता दिवस का यही सबसे बड़ा संदेश है, हम स्वराज्य को केवल सत्ता नहीं, संस्कार मानें, हम स्वतंत्रता को केवल भाषण नहीं, साधना बनाएं और हम भारत को केवल देश नहीं, अपने आत्मबोध का प्रतीक मानें।

आज जब हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, तो यह केवल ध्वजारोहण, परेड और भाषणों तक सीमित न रहे। हमें यह भी स्मरण करना चाहिए कि यह दिन हमें अपनी आत्मा से जुड़ने, अपने कर्तव्यों को पुनः पहचानने और अपनी संकल्पशक्ति को सुदृढ़ करने का निमित्त है। भारत की स्वतंत्रता किसी एक वर्ग, धर्म या जाति की देन नहीं, अपितु यह वह सामूहिक चेतना थी, जिसमें किसान, मजदूर, शिक्षक, विद्यार्थी, महिला, पुरुष, संत, विचारक, सबने अपनी आहुति दी।

स्वतंत्रता दिवस केवल अतीत की स्मृति नहीं, वर्तमान की जिम्मेदारी और भविष्य की नींव है। यदि हम इसे स्व–नियंत्रण, स्व–शासन और स्व–कल्याण के समग्र आयामों से समझें, तभी हम उस भारत को गढ़ पाएंगे, जो न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध होगा, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी विश्व को दिशा देने वाला होगा। यही भारत की नियति है, यही उसका अभ्युदय और यही उसकी सनातन चेतना है।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में स्वतंत्रता का अभिप्राय बाहरी शासन से मुक्ति भर नहीं रहा है। प्राचीन भारत में 'स्वराज्य' का विचार केवल राजनीति तक सीमित नहीं था, वह व्यक्ति के आत्मविकास और समाज की आत्मनिर्भरता से जुड़ा था। ऋग्वेद में कहा गया है– "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" अर्थात् मिलकर चलो, मिलकर बोलो, और एक ही मन से विचार करो। यही तो स्वनियंत्रित समाज की आधारशिला है। सम्राट अशोक, जो कलिंग युद्ध के बाद पश्चाताप की अग्नि में तपकर धर्माश्रित राज्य की ओर उन्मुख हुए, उन्होंने राजकीय तंत्र को भी नैतिक और संयमित बनाया। यही वह भाव था जिसे महात्मा गांधी ने बीसवीं सदी में फिर से जाग्रत किया। उनके लिए स्वराज्य का अर्थ केवल अंग्रेज़ों से आज़ादी नहीं, बल्कि आत्मशासन था– "स्वराज्य तब ही संभव है जब हम अपने शरीर, मन और इच्छाओं पर नियंत्रण पा सकें।" इसी कारण वे कहते थे–"स्वराज मेरी झोंपड़ी में भी हो, ऐसा स्वराज चाहिए।"

स्वतंत्र भारत के समक्ष प्रारंभ में अनेक चुनौतियाँ थीं– विभाजन का दर्द,

शरणार्थियों की समस्या, रियासतों का एकीकरण, आर्थिक असंतुलन, साक्षरता की कमी, और कृषि पर निर्भर अर्थव्यवस्था। किन्तु इन चुनौतियों के बीच भारत ने जिस संयम और आत्मबल से स्वयं को नियंत्रित किया, वही उसकी सबसे बड़ी शक्ति बनी। संविधान निर्माण से लेकर लोकतांत्रिक प्रणाली की स्थापना तक, यह स्व–नियंत्रण की उदात्त भावना का ही परिणाम था। डॉ. भीमराव अंबेडकर, जिन्होंने भारतीय संविधान का मसौदा तैयार किया, उन्होंने बार–बार चेताया कि "लोकतंत्र केवल एक शासन प्रणाली नहीं, यह एक जीवन पद्धति है।" इसमें सबसे आवश्यक है, नागरिकों का आत्मानुशासन और उत्तरदायित्व–बोध। उन्होंने यह भी कहा कि "संविधान जितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि चलाने वाले लोग नैतिक और उत्तरदायी न हों, तो वह संविधान भी विफल हो सकता है।" यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

आज स्वतंत्रता का अर्थ बदल चुका है। अब भारत केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा नहीं करता, वह आत्मनिर्भरता की दिशा में भी अग्रसर है। आत्मनिर्भर भारत का अभियान केवल एक आर्थिक योजना नहीं, यह मानसिक स्वतंत्रता का घोष है। यह देशवासियों को यह कहता है कि हम आत्मनिर्भर बनें– विचारों में, तकनीक में, संसाधनों में और चरित्र में। आज भारत रक्षा क्षेत्र में अपने लड़ाकू विमान, मिसाइलें और उपग्रह बना रहा है। विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में 'इसरो' और 'डीआरडीओ' जैसी संस्थाएँ विश्वस्तरीय अनुसंधान कर रही हैं। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियान, भारत को केवल आर्थिक महाशक्ति नहीं बना रहे, बल्कि आत्मविश्वास से परिपूर्ण राष्ट्र भी बना रहे हैं। यह आत्मविश्वास वही है, जो स्वनियंत्रण से उपजता है, जहां राष्ट्र अपने भीतर झांकता है, अपनी क्षमताओं को पहचानता है, और उन्हें विकसित करता है।

स्वतंत्रता केवल कुछ विशेष वर्गों की जागीर न हो, इसका ध्यान रखना भी स्व–नियंत्रण का अंग है। एक ऐसे समाज की स्थापना करना जहां जाति, लिंग, धर्म, भाषा या क्षेत्र के आधार पर कोई भेद न हो, यही भारतीय लोकतंत्र का उद्देश्य रहा है। लेकिन दुर्भाग्यवश, स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हम कभी–कभी ऐसे संघर्षों में उलझ जाते हैं जो हमारी सामाजिक चेतना को खंडित करते हैं। जातिवाद, सांप्रदायिकता, भाषाई क्षेत्रवाद और वर्गीय विषमता– ये सभी विघ्न स्वतंत्रता के मूल भाव में ही नहीं, बल्कि आत्मनियंत्रण की प्रक्रिया में भी अवरोध उत्पन्न करते हैं। समाज तभी सशक्त बन सकता है, जब हर व्यक्ति यह समझे कि उसका 'स्व' दूसरे के 'स्व' से जुड़ा हुआ है। यही सामूहिक स्व है, जो भारत को भारत बनाता है– विविधता में एकता का अद्वितीय उदाहरण।

आज स्वतंत्र भारत में हमें अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है– प्रेस, साहित्य, सोशल मीडिया, भाषण, सभी माध्यम खुले हैं। किन्तु यह स्वतंत्रता तभी सशक्त बनती है जब उसमें संयम हो। जब अभिव्यक्ति 'विचार' को जन्म देती है, न कि 'विरोध की सनक' को; जब वह 'संवाद' का माध्यम बनती है, न कि 'संवेदना के विघटन' का। स्वतंत्रता का यह आयाम आज के भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषतः युवाओं के लिए। जब युवा अपने विचारों को स्वतंत्रता से प्रकट करें, लेकिन साथ ही वे उस मर्यादा और सहिष्णुता को न भूलें जो भारतीयता की आत्मा है, तभी राष्ट्र सुदृढ़ होगा। लोकतंत्र की बुनियाद अभिव्यक्ति की आज़ादी है, लेकिन लोकतंत्र की आत्मा है– संयम, संवाद और सहिष्णुता।

आज भारत न केवल अपने लिए सोच रहा है, बल्कि विश्व के लिए भी दिशा निर्धारित कर रहा है। जी20 की अध्यक्षता, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भागीदारी, पर्यावरण संरक्षण में वैश्विक नेतृत्व और वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की आवाज बनना– यह सब केवल कूटनीति नहीं, आत्मविश्वासी स्वतंत्रता का प्रमाण है। भारत आज विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है, किंतु वह केवल भौतिक संसाधनों से नहीं बनेगा– यह आत्मिक, नैतिक और बौद्धिक स्व–नियंत्रण से ही संभव है। जब भारत अपने वैदिक ज्ञान, योग, आयुर्वेद, संस्कृति और सहिष्णुता के मूल्यों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करता है, तो वह केवल अतीत का गौरव नहीं करता, बल्कि वर्तमान की नैतिक जरूरतों की पूर्ति भी करता है। वैश्विक हिंसा, युद्ध, और सांस्कृतिक टकरावों के बीच भारत की भूमिका एक संतुलनकारी, संयमित और संवादकारी राष्ट्र की होनी चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस केवल झंडारोहण या देशभक्ति गीतों का उत्सव नहीं, यह आत्मचिंतन का दिवस है। यह वह क्षण है जब हर भारतीय को यह आत्ममंथन करना चाहिए कि "क्या मैं केवल स्वतंत्र हूं या स्वनियंत्रित भी हूं?" क्या मैं अपने देश के लिए कुछ ऐसा कर रहा हूं जो उसकी आत्मा को पुष्ट करे? क्या मेरी स्वतंत्रता से किसी और की स्वतंत्रता बाधित तो नहीं हो रही?

आज आवश्यकता है कि हम स्वतंत्रता को केवल उत्सव नहीं, एक जीवंत उत्तरदायित्व समझें। यदि भारत को सचमुच महान बनाना है, तो हर नागरिक को यह स्वीकार करना होगा कि स्वतंत्रता के साथ संयम, संवेदनशीलता और सेवा की भावना भी अनिवार्य है। तब ही वह भारत साकार होगा, जो न केवल आर्थिक महाशक्ति होगा, बल्कि मानवीय मूल्य, सामाजिक न्याय और समरसता का आदर्श बनेगा। स्वतंत्रता वह दीप है, जो बाहर से नहीं, भीतर से जलता है। उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए ईंधन चाहिए– आत्मबल का, नैतिकता का, और स्वनियंत्रण का। यही इस दिवस का यथार्थ संदेश है– एक जागरूक, उत्तरदायी, और संयमशील भारत की परिकल्पना। ■

ISSN No. 2581-3528

आयुष्मान भारत योजना से ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य क्रांति : तकनीक से बदलते ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र

अमन दुबे
शोध छात्र, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन गुरु गोबिंद सिंह विवि. दिल्ली

भारत का मूल तत्त्व उसके गांवों में समाहित है, इसमें व्याप्त अलग-अलग ग्रामीण परम्पराएँ भारत को विविध बनातीं हैं। विगत सरकारों के लिए भारत के विशाल भूभाग में स्वास्थ्य सेवाओं की पर्याप्त सुविधा मुहैया करना वर्षों से एक चुनौती बानी हुई थी। इस चुनौती से निपटने के लिए नई सोच और नई तकनीक को स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने की आवश्यकता थी, विगत सरकारों के निष्फल प्रयासों ने स्वास्थ्य सेवाओं को गर्द में ढकेला। वहीं दूसरी तरफ वर्तमान की भाजपा सरकार के कठिन प्रयासों ने वर्षों पुराने स्वप्न को साकार करने का काम किया है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदर्शिता का ही परिणाम है की आज पूरे भारत वर्ष में आयुष्मान भारत योजना का सुचारु रूप से क्रियान्वयन किया जा रहा है।

आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत वर्ष 2018 में भारत के प्रत्येक नागरिक को सुलभ, गुणवत्तापूर्ण, और व्यापक सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। इस योजना के दो मुख्य अंग है, पहला है प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PMJAY) और दूसरा स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र (HWC)। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत गरीब और वंचित परिवारों को 5 लाख रूपए वार्षिक इलाज खर्च के लिए दिया जा रहा है। वहीं स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के माध्यम से व्यापक स्वास्थ्य सेवाएं गांव-गांव तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। भारत सरकार ने 1,50,000 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया है। इन स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों की उपयोगिता भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत अधिक है, क्योंकि ये केंद्र न केवल इलाज, अपितु स्वास्थ्य जागरूकता, मातृ एवं शिशु देखभाल, किशोर स्वास्थ्य, बाल पोषण, टीकाकरण, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर (गर्भाशय, स्तन, मुँह), मानसिक स्वास्थ्य, योग, और क्रोनिक बीमारियों की जाँच एवं उपचार के लिए काम कर रहे हैं। इन केंद्रों का खासा ध्यान परिवार नियोजन पर है। औसतन 3000 से 5000 की जनसँख्या पर एक स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमें कर्मचारी के रूप में एक सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (CHO), मल्टीपर्पज स्वास्थ्य कर्मी (महिला-पुरुष) और पांच से आठ आशा कार्यकर्ता होतीं हैं। ये सभी स्वास्थ्य कर्मी समुदाय के साथ निरंतर संवाद करके उन्हें स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं प्रदान करते हुए ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

लेखक ने एक अध्ययन के माध्यम से उत्तर प्रदेश के तीन जिले - गोरखपुर, भदोही और अलीगढ़ में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (CHO) और आशा कार्यकर्ताओं से उनके काम के बारे में जानने और तकनीक का उनके कार्य में इस्तेमाल होने से आने वाले बदलावों को अध्ययन किया। अध्ययन में पता चला कि इन

ISSN No. 2581-3528

स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों पर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को पोषित आहार, स्वच्छता, मातृ एवं शिशु देखभाल, परिवार नियोजन, टीकारण आदि सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। सबसे अनोखी स्वास्थ्य सेवा ई–संजीवनी प्लेटफार्म के जरिये टेली–परामर्श से प्रदान की जा रही है। टेली–परामर्श या वर्चुअल–कंसल्टेशन की सुविधा ने मानो ग्रामीण स्वास्थ्य ढांचे को एक नई उड़ान और उम्मीद प्रदान की है। गांव तक डॉक्टर की पहुँच लैपटॉप और मोबाइल के जरिये हो रही है, इन उपकरणों के माध्यम से वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग करा कर स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों को डॉक्टर से जोड़ा जा रहा है। इस सुविधा के माध्यम से दूर दराज के इलाकों में भी डॉक्टर प्रत्यक्ष रूप से मौजूद हो पा रहे हैं।

जिला एवं राज्य स्तर के डॉक्टरों को लैपटॉप और मोबाइल के माध्यम से मरीज से वार्ता करने का काम सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी कर रहे हैं। विशेषज्ञ डॉक्टर (बाल रोग, स्त्री रोग, मेडिसिन, त्वचा रोग, आदि) मरीज की स्वास्थ्य रिपोर्ट का आकलन मरीज और सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा मुहैया कराई गई जानकारी के आधार पर करते हैं और आवश्यक दवा और जांच की जानकारी सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी के जरिये मरीज को आसान भाषा में प्रदान करते हैं। परामर्श के बाद डॉक्टर इलेक्ट्रॉनिक प्रिस्क्रिप्शन प्रदान करते है, जिसे सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी तुरंत प्रिंट करके मरीज को मुहैया करते है। इससे मरीज का इलाज उन्हीं के गांव में संभव हो पा रहा है, उन्हें अनावश्यक शहर की यात्रा करने की अव्यश्यकता नहीं पड़ रही है। कई आवश्यक जाँच की सुविधा स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों पर मुहैया कराई जा रहीं है, अगर किसी सुविधा का आभाव होता है तो मरीज को जिला स्तर के अस्पताल में आशा कार्यकर्ता द्वारा जांच कराने में मदद की जाती है। दवा की उपलब्धता की समस्याओं से जूझता ग्रामीण

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत गरीब और वंचित परिवारों को 5 लाख रुपए वार्षिक इलाज खर्च के लिए दिया जा रहा है। वहीं स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के माध्यम से व्यापक स्वास्थ्य सेवाए गांव–गांव तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। भारत सरकार ने 1,50,000 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया है।

समाज आज निःशुल्क सेवा के जरिये दवा और जांच की सुविधा प्राप्त कर रहा है, इससे गरीब वर्ग के लोग आर्थिक संकट से बच रहे है। बहुत सी गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श इन स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों पर आसानी से हो रहा है। मानो लगता है की मरीज के घर स्वयं डॉक्टर पधार कर उसका इजाल कर रहा है। सामुदायिक सत्रों के माध्यम से योग के प्रति जागरूकता, पौष्टिक आहार की जानकारी, स्वच्छता अपनाने आदि के जरिये स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र ग्रामीण समाज को रोग के इलाज की जगह रोग से रोकथाम की तरफ अग्रसर कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी का यह स्वप्न अब केवल स्वप्न नहीं अपितु साकार रूप ले चुका है। पूर्ववर्ती सरकारों के ढकोशलों की हवा निकल चुकी है और अब मोदी–योगी की डबल इंजन की सरकार में मुश्किल से मुश्किल काम मुमकिन होते नजर आ रहे हैं। इसीलिए कहा जाता है की मोदी है तो मुमकिन है।

स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के सुचारु क्रियान्वयन ने हमें दिखा दिया है कि ग्रामीण भारत को डिजिटल इंडिया मिशन से जोड़ा जा रहा है। स्वास्थ्य क्षेत्र में डिजिटलीकरण केवल एक मिशन नहीं अपितु विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर भारत वर्ष के तेजी से बढ़ते हुए कदम हैं। वह दिन दूर नहीं जब पूरे भारत वर्ष को स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के माध्यम से जोड़ दिया जाएगा, हर गांव हर व्यक्ति का डिजिटल मेडिकल रिकॉर्ड मौजूद होगा, टेली–मेडिसिन की मोबाइल यूनिट हर गांव तक पहुंचेगी, हर एक स्वास्थ्य केंद्र प्रौद्योगिकी आधारित स्वास्थ्य सुविधाओं से लैश होगा और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल ग्रामीण परिवेश में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए किया जाएगा। महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के लिए आधुनिक और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच घर–घर तक होगी। ■

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन

समाज को दिशा देने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। हमारे आस-पास समाज में अनेक ऐसे उदाहरण सामने आ रहे हैं जो जागरूक नागरिक और उन्नत समाज का बोध कराने वाले हैं। प्रस्तुत हैं समाज जागरण के पंच परिवर्तन के कुछ उदाहरण-

'स्व'

अपने हुनर से शुरू किया स्टार्टअप

आजकल बहुत से युवा अपने भविष्य के निर्माण के लिए पढ़ाई लिखाई करने के बाद अपने गांव देहात को छोड़कर शहरों का रुख कर लेते हैं और वहां अपनी भविष्य को गढ़ते हैं लेकिन जिस तरह से देश की आबादी बढ़ रही है उसमें सभी के लिए सरकारी या प्राइवेट नौकरी पाना संभव नहीं होता है। ऐसे में गढ़वाल के तीन युवाओं ने नौकरी पर निर्भर रहने की बजाय आत्मनिर्भर होने का निर्णय लिया और वे आज आत्मनिर्भर होकर दूसरों को भी प्रेरणा दे रहे हैं। बात हो रही है उत्तराखण्ड के श्रीनगर के कीर्ति नगर ब्लॉक के तीन दोस्तों की जिन्होंने लकड़ी से मठ, मंदिरों की मूर्तियां और सजावटी उत्पाद बनाकर एक ऐसा स्टार्टअप खड़ा कर दिया जिसकी मांग श्रीनगर से लेकर आसपास के क्षेत्र में भी होने लगी है। पत्रकारिता में एमए और ग्राफिक डिजाइनिंग का कोर्स करने के बाद युवा मनोज ने मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी की लेकिन नौकरी में उनका मन नहीं लगा। मनोज ने अपने दो दोस्तों अमित रावत और महावीर कंडारी के साथ मिलकर अपने हुनर को रोजगार में बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने लकड़ी से मंदिरों की आकृति मूर्तियां व सजावटी सामान बनाने की यूनिट प्रारंभ की। पहले किराए के एक छोटी सी दुकान से यह सफर शुरू हुआ, लकड़ी से तैयार बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री मंदिरों की आकृति व सजावटी उत्पाद न केवल श्रीनगर में बल्कि रुद्रप्रयाग और चार धाम यात्रा पर आने वाले तीर्थ यात्रियों में भी खासे लोकप्रिय हो गए हैं। उनके प्रोडक्ट्स को धार्मिक श्रद्धा और कलात्मकता का बेहतरीन संगम माना जा रहा है। पहले वह हाथों से काम करते थे लेकिन अब इन दोस्तों ने मशीन भी लगा ली हैं और वे महीने में 50 से 60 हजार रुपए का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं। अब धीरे-धीरे वे अपने कार्य के विस्तार की योजना भी बना रहे हैं।

मसाले पीसकर बदल दी अपनी जिन्दगी

हमारा जीवन ऐसा है जहाँ सुख और दुःख धूप-छाँव की तरह हमारे साथ बने रहते हैं। कभी-कभी जीवन की कोई घटना इतना बड़ा आघात दे जाती है कि उससे उबरना संभव नहीं होता है। किन्तु मानव को ऐसी कठिन परिस्थिति में उस आघात से उबरना ही होता है यही जीवन का सच है। ऐसी ही एक कहानी है उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले के गाँव गुललपुर की रहने वाली आरती की। आरती गाँव के एक साधारण किसान परिवार से हैं, उनके पति ट्रैक्टर चलाकर घर-परिवार का भरण पोषण करते थे। कहते हैं न कि मानव जीवन अप्रत्याशित है, यहाँ कभी भी कुछ भी घट सकता है। ऐसा ही आरती के साथ हुआ, 2010 में उनके पति का बीमारी से आकस्मिक निधन हो गया। आरती के सामने तीन बच्चों के भरण-पोषण और उनकी पढ़ाई-लिखाई की चुनौती थी। वह कभी घर से बाहर भी नहीं निकली थीं। उन्होंने अपना दुःख भुलाकर मेहनत मजदूरी कर अपने बच्चों के लिए काम करना शुरू कर दिया। वर्ष 2019 में उन्हें गाँव की एक महिला ने स्वयं सहायता समूह के बारे में बताया। आरती ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन कार्यालय जाकर परामर्श लिया और शीतला माँ के नाम से एक समूह का गठन किया। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने 1.10 लाख रूपये का ऋण लेकर मसाला पिसाई की चक्की से कुटीर उद्योग की शुरुआत की। आज उनके द्वारा तैयार मसाले गाँव भर में बिकते हैं और साथ ही परिषदीय स्कूलों में भी उपयोग में लाये जा रहे हैं। आरती आज स्वाभिमान के साथ आत्मनिर्भर बनकर न केवल अपने बच्चों का पालन-पोषण कर रही हैं बल्कि गाँव की कुछ महिलाओं को रोजगार भी दे रही हैं। आरती की कहानी उन महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जिनके जीवन में अचानक से कोई मुसीबत आ जाती है। आरती जैसी महिलाएं यह सिद्ध करती हैं कि जीवन के दुःखों में से ही मार्ग निकालना होता है। यदि आप हिम्मत नहीं हारते हैं तो ईश्वर भी आपकी मदद करते हैं। आरती का प्रयास इसका एक सफल उदाहरण है।

ISSN No. 2581-3528

कुटुंब प्रबोधन

बिना चुनाव ही बन गयी पंचायत

भारत दुनिया का एक ऐसा राष्ट्र है जो अपनी अनूठी सांस्कृतिक परंपरा और विरासत के लिए विश्व विख्यात है। भारत में अनेक परंपराएं सदियों से स्थापित हैं जो लोगों को जीने का एक नया नजरिया देतीं हैं। ऐसी ही एक परंपरा है भारत की कुटुंब परंपरा। इस परंपरा के अनुसार भारत पूरे विश्व को ही एक कुटुंब मानता है। पिछले कुछ वर्षों में आधुनिक विकास ने हमारी इस परंपरा को आघात पहुंचाया है लेकिन भारत की सांस्कृतिक जड़ें इतनी मजबूत है कि समय–समय पर समाज के सामने ऐसे उदाहरण आते रहते हैं जो हमारी परंपराओं को सशक्त करते हैं और उन्हें संरक्षित करने का संदेश देते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है पिथौरागढ़ जिले के मजेरा गांव के निवासियों का जिन्होंने अपने पूरे गांव को एक कुटुंब माना और पंचायत चुनाव में वह कर दिखाया जिसकी किसी को उम्मीद भी नहीं थी। मझेड़ा गांव में पंचायत चुनाव थे तो गांव की लगभग 600 की आबादी में आपसी सहमति से ग्राम प्रधान से लेकर वार्ड सदस्य तक के सभी पदों पर निर्विरोध चयन कर लिया गया। ग्राम सभा का गठन बिना किसी चुनावी मुकाबले के होना अपने आप में रोचक है। पंचायत चुनाव की अधिसूचना जारी होते ही गांव में एक खुली बैठक बुलाई गई जिसमें सभी जातियों और वर्गों के लोग सम्मिलित हुए। बैठक में तय किया गया कि गांव एक कुटुंब के समान है, कुटुंब की एकता बनी रहे इसलिए सभी पदों पर सर्वसम्मति से चयन किया जाएगा। ऐसा सबकी सहमति से हुआ और किसी प्रकार का विरोध भी नहीं हुआ, यह पंचायत निर्विरोध बन गई। इसके लिए गांव के युवाओं ने पहल की और गांव को एक कुटुंब मानते हुए पारिवारिक एकता का परिचय दिया। इस बैठक में गांव के सभी पूर्व प्रधान भी उपस्थित थे। मझेड़ा गांव में हुई यह घटना आस–पास के लोगों में चर्चा का विषय बनी रही। जहां पंचायत चुनाव में भी लोग एक दूसरे से ईर्ष्या–विरोध रखते हुए चुनाव लड़ते हैं वहां इस प्रकार का उदाहरण दूसरे गांवों के लिए भी प्रेरक बनना चाहिए क्योंकि गांव हमारी कुटुंब परंपरा का ही एक विकसित स्वरूप है।

चार पीढ़ियों वाला अनोखा कुटुंब

आज जिस आधुनिक युग में हम प्रवेश कर चुके हैं उसने हमारा जीवन रोबोटिक अर्थात यांत्रिक बना दिया है। हम खुद को एक मशीन की तरह आजीविकोपार्जन की दौड में झोंक देते हैं। अपने मूल स्थान से पलायन कर हम शहरों की ओर जा रहे हैं और इस तरह से भारत की हजारों वर्ष पुरानी कुटुंब परम्परा टूटती नजर आती है। काम–धंधे की तलाश में अपना गाँव–देहात घर–परिवार छोड़कर शहर में एकल परिवार बढ़ रहे हैं लेकिन आज भी हमारी सांस्कृतिक जड़ें बहुत मजबूत हैं। इसी का एक उदाहरण है देहरादून के चकराता में चिल्हाड़ का मदियाइक परिवार जो आज भी जनजातीय क्षेत्र का सबसे बड़ा कुटुंब है। इस संयुक्त परिवार में 95 सदस्य हैं। परिवार की ख़ास बात यह है कि चार पीढ़ी के सदस्य एक ही छत के नीचे हंसी–खुशी से रहते हैं। पंचायत चुनाव में चकराता ब्लॉक के मतदान केंद्र चिल्हाड़ में इस परिवार की तीन पीढ़ी के 40 सदस्यों ने अपना मतदान भी किया है। इस कुटुंब के मुखिया 98 वर्षीय मदिराम बिज्लवाण ने अपने पुत्रो, पौत्रों एवं प्रपौत्रों के साथ मतदान कर अपने नागरिक कर्तव्य का पालन किया। आज के समय में जहाँ लोग स्वतंत्र जीवन जीने की तलाश में अपने कुटुंब का परित्याग कर एकल परिवारों में सिमटकर रह रहे हैं वहां उत्तराखंड का यह परिवार कम सुविधाओं में भी एक साथ मिल–जुलकर हंसी–खुशी के साथ जीवन बिताकर यह सन्देश दे रहा है कि जीवन का असली मजा सुख–सुविधाओं में नहीं बल्कि अपनों के साथ जीने में है। ऐसे परिवार हमारी उन युवा पीढ़ियों के लिए प्रेरणा हैं जो ज्यादा तथाकथित स्वतंत्रता और सुख–सुविधाओं के लालच में अपने गाँव–देहात और कुटुंब से पलायन कर अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं और शहरों की आपा–धापी में एकाकीपन में जीवन व्यातीत कर रहे हैं।

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्तव्य

संस्कृत ही जोड़ेगी अपनी जड़ों से

भारत की अनूठी संस्कृति का प्रचार प्रसार जन–जन तक करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास समाज में होते रहते हैं। ऐसा ही एक प्रयास किया गया मथुरा में। संस्कृत भारत की अति प्राचीन भाषा है और भारत का समस्त प्राचीन ज्ञान–विज्ञान संस्कृत भाषा में हीं संरक्षित है। जब तक भारत के जनमानस को संस्कृत का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह अपनी सांस्कृतिक विरासत से नहीं जुड़ सकेगा। अंग्रेजों ने कुटिलतापूर्वक हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से दूर करने के लिए संस्कृत पठन–पाठन की परम्परा को अवरुद्ध कर दिया। आजादी के बाद भी इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। सस्कृत भाषा के उत्थान का विचार करते हुए मथुरा की संस्कृत भारती इकाई ने महर्षि वेदव्यास के अवतरण दिवस आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण पूर्णिमा संस्कृत दिवस तक संस्कृत भाषा का प्रचार करने के उद्देश्य घर–घर श्रीमद्भगवद्गीता और तुलसी पौधा वितरित किया। कार्यक्रम के संयोजक योगेश उपाध्याय ने बताया कि व्यास पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर 9 जुलाई को कृष्ण गंगा घाट स्थित वेदव्यास जी की साधना स्थली व्यास मंदिर पर गोष्ठी हुई और उसके पश्चात संस्कृत भाषा के उत्थान हेतु उसे जनसाधारण की भाषा बनाने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया। नागरिकों के माध्यम से समय–समय पर होने वाली ऐसी गतिविधियां न केवल नागरिक कर्तव्य पालन की दृष्टि से सराहनीय है बल्कि देश की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के लिए और उसका संवर्धन करने के लिए भी आवश्यक है। अपने महापुरुषों की जयंती पर नागरिक जनों का किसी न किसी समाज कार्य के लिए समर्पित होना एक जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ समाज का लक्षण है।

प्रयागराज का शहीद स्मारक

हमें गर्व है कि हम दुनिया के एक ऐसे देश में पैदा हुए हैं जो पूरी दुनिया में विरला और अनूठा है इस देश की अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत को सहेजना और उस पर गर्व करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। हम सभी जानते हैं कि देश को स्वाधीन कराने की लड़ाई में अनगिनत देशवासियों ने अपना बलिदान दिया। कुछ ऐसे हैं जिन्हें इतिहास में जगह मिली लेकिन बहुत से ऐसे गुमनाम नायक हैं जिन्हें इतिहास के पन्नों में जगह ही नहीं मिली। ऐसे गुमनाम नायक न तो किसी राजनीतिक परिवार से थे, न हीं किसी बड़े व्यापारी वर्ग से। ये भारत के आम जनमानस थे, जिनमें कोई किसान, सफाई कर्मचारी और मजदूर था तो कोई नौकरीपेशा, जिन्होंने चुपचाप इस राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित किया। ऐसे नायकों को सम्मान देने के लिए प्रयागराज में 'भारत भाग्य विधाता संस्था' ने एक अनूठी पहल कर नागरिक कर्तव्य का पालन किया है। अपने नगर के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की पहचान कर उन्हें सम्मान देने के उद्देश्य से संस्था ने प्रयागराज के सिविल लाइंस क्षेत्र में स्थित रोडवेज बस स्टैंड के सामने 'शहीद वॉल' का निर्माण कराया है, यहां पर 26 स्वतंत्रता सेनानियों के नाम और चित्र उनके योगदान के साथ अंकित किए गए हैं। शाम को रौशनी में नहाई इस वॉल का नजारा सभी को भावुक कर देने वाला होता है। यहाँ स्वधीनता सेनानियों की स्मृति में लोग दीप भी जलाते हैं। इसकी वॉल की स्थापना स्वामी विवेकानंद जयंती 12 जनवरी 2015 को की गयी थीं। इसी वर्ष प्रयागराज महाकुम्भ के अवसर पर इसका पुनरू सौंदर्यीकरण किया गया, इस वॉल ने महाकुम्भ में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को भी आकर्षित किया। आज जरुरत है कि हम भी अपने आस–पास के ऐसे गुमनाम नायकों के लिए इस तरह के स्मारक बनाकर अपने नागरिक कर्तव्य का पालन करें।

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण

अनोखा ग्रीन न्यूक्लियर बम

पर्यावरण संरक्षण आज हम सभी के लिए महत्वपूर्ण बन गया है क्योंकि पिछले कुछ दशकों में हमने अपने पर्यावरण के साथ इतनी अनदेखी की है कि आज पर्यावरण से संबंधित अनेक समस्याएं हमारे सामने संकट बनकर खड़ी हो गई है। कहते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में ही कुछ लोग मार्ग निकाल लेते हैं। ऐसा ही किया है काशी के रहने वाले श्याम चौरसिया ने जिन्होंने एक ऐसा बम बनाया है जो अन्य बमों की तरह घातक नहीं है बल्कि जिस स्थान पर जहाज से गिराया जाएगा उस स्थान के एक बड़े भूभाग को हरा भरा कर देगा। काशी के रहने वाले श्याम चौरसिया ने इस बम को 'ग्रीन न्यूक्लियर बमश नाम दिया है। पांच फुट लंबा और 25 किलोग्राम वजनी ग्रीन न्यूक्लियर बम एक साथ कई करोड़ पौधे उगा सकता है। इसे विमान से लॉन्च या ड्रॉप करने पर जमीन पर गिरने से पहले इसमें भरे सौ से अधिक पौधों की प्रजातियों के एक करोड़ से अधिक बायो–न्यूट्रीशन बीज कैप्सूल काफी दूर तक फैल जाते हैं। हवा के संपर्क में आने पर इन बीज कैप्सूल को उगने में मदद मिलेगी।

अब संकट नहीं रहेगी प्लास्टिक की पन्नियाँ

आज की दुनिया प्रगति के जिस पथ की ओर अग्रसर है उसे हम भले ही विकास कहते हों लेकिन वह विकास कम विनाश ज्यादा है। विकास यदि प्रकृति के प्रतिकूल हो तो मानव सभ्यता के लिए विध्वंसक बन जाता है। आज दुनिया जिस पर्यावरण संकट से जूझ रही है उसका कारण मानव कृत अमर्यादित विकास ही है। हम भी अपने आस–पास मानव निर्मित एक संकट का सामना कर रहे हैं और वह है बढ़ता कचरा। कचरा हमारे बड़े नगरों की एक बड़ी समस्या बन चुका है। इसमें भी प्लास्टिक कचरा पर्यावरण के लिए गंभीर संकट है। आगरा के दयालबाग शिक्षण संस्थान ने इस दिशा में एक सार्थक पहल करते हुए एक ऐसी तकनीक को विकसित किया है जो बेकार की प्लास्टिक को जूतों के इनसोल, बिजली के तारों के इन्सुलेशन टेप और दूसरे उपयोगी सामान में बदल देती है। संस्थान के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के होनहार शिक्षकों ने वैज्ञानिक अनुसंधान करते हुए बिना किसी रसायन के केवल गर्मी और दबाव का प्रयोग कर प्लास्टिक की पन्नियों को मजबूत और लचीली शीट में बदलने में सफलता पा ली है। इसे 'वेस्ट प्रोसेस्ड शीट' का नाम दिया गया है। यह शीट इतनी मजबूत है कि इसका इस्तेमाल इलेक्ट्रिकल उपकरणों से सम्बंधित उत्पाद बनाने में भी किया जा सकता है। इस तकनीक की सबसे खास बात यह है कि यह इतनी सरल है कि इसका उपयोग संस्थान द्वारा निर्मित 'एटम क्लिकिंग मशीन' से घर पर भी किया जा सकता है। यहाँ तक कि प्रशिक्षण के बाद घर की साधारण प्रेस से भी प्लास्टिक की पन्नियों को शीट में बदला जा सकता है। इस तरह के नए–नए प्रयोग निश्चित रूप से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारत ही नहीं पूरी दुनिया को ऐसे नए आविष्कारों से लाभ पहुंचेगा। पर्यावरण शत्रु प्लास्टिक की पन्नियों को उपयोग में लाने की ऐसी पहल सराहनीय है।

ISSN No. 2581-3528

जहाँ गुरूद्वारे के चौक में विराजते हैं हनुमान जी भी

अक्सर हम सुनते हैं की धार्मिक मामलों को लेकर समाज के अलग–अलग समुदायों अथवा वर्गों में परस्पर विरोध हो जाता है। यह परस्पर वैमनस्य और एक लंबे समय तक मनमुटाव का कारण बन जाता है। ऐसा ही एक मामला वाराणसी के जगतगंज क्षेत्र में गुरुद्वारा और हनुमान मंदिर के बीच का है जहां पिछले 42 साल से 3500 वर्ग फीट की संपत्ति पर स्वामित्व को लेकर दोनों पक्षों में विवाद था। यह मामला वर्षों से कोर्ट में चल रहा था। कोर्ट के आदेश से इस संपत्ति पर ताला लगा दिया गया था। बताया जाता है कि सिख पंथ के नवे गुरु तेग बहादुर जी 200 वर्ष पूर्व नीची बाग स्थित गुरुद्वारा आए थे। अपने शिष्यों से मिलने के बाद वह जगतगंज भी आए और यहाँ उनके चरण स्पर्श की भूमि है इसलिए यहां एक गुरुद्वारे का निर्माण किया गया था। इसी स्थान पर हनुमान जी का भी मंदिर है। 42 वर्ष पूर्व कुछ असामाजिक तत्वों ने यहां विवाद पैदा कर दिया। इस मामले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए बाबू जगत सिंह के परिवार के सहयोग से दोनों पक्षों के बीच सीधी वार्ता कराई और यह सहमति बनी कि दोनों धार्मिक स्थल एक दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करते हुए एक ही प्रांगण में रहेंगे। अब यह स्थान सांप्रदायिक सौहार्द और समरसता का प्रतीक बन गया है।

ब्रज की रास लीला में समरस होती नई पीढ़ी

भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति का वैश्विक सांस्कृतिक पटल पर अनुपम स्थान है। भारत में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां देश के कोने–कोने में चलती रहती हैं। ऐसी ही एक गतिविधि है मथुरा वृन्दावन की रासलीला। भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी के प्रेम और आनंद से भरी लीलाओं का मंचन सदियों से होता आ रहा है। ब्रज में छोटी बड़ी करीब 100 रास लीला मंडलिया हैं जो देश विदेश में अनेक स्थानों पर मंचन करती हैं। खास बात यह है कि अब तक ऐसी मंडलियों में केवल पुरुषों का ही वर्चस्व था, वे ही नारी पात्रों की भूमिका भी निभाते थे। लेकिन अब बदलते समय में नारियां भी आगे बढ़ी हैं, वे भी एक उन्नत समाज में अपनी भूमिका निभा रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने यह तय किया कि अब इन कलाकारों में समाज के प्रत्येक वर्ग से बेटियों को भी सम्मिलित किया जाएगा। सभी कलाकारों को अभिनय, वादन, नृत्य में पारंगत किया जाएगा। परिषद द्वारा संचालित शिक्षण संस्थान, वृन्दावन के गीता शोध संस्थान में नए कलाकारों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अकादमी के निदेशक प्रो. दिनेश खन्ना के अनुसार 90 दिनों में 30 से 50 बच्चे एक ही बैच में प्रशिक्षण लेकर भारत की इस अमूल्य निधि को संरक्षित करना सीख रहे हैं। बेटों की अपेक्षा बेटियों की संख्या अधिक है। इस प्रशिक्षण में वर्ग, जाति और लिंग आदि किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है यह सामाजिक समरसता का एक भावपूर्ण उदाहरण है जो न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत से हमारी नई पीढ़ी को जोड़ रहा है बल्कि उन्हें स्वावलंबन की दिशा भी प्रदान कर रहा है।

ISSN No. 2581-3528

स्वदेशी विकल्प जरूरी

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंम्प द्वारा टैरिफ वार के चलते तथा ट्रंम्प द्वारा भारत पर अत्याधिक कर लगाने के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी की एक सभा को सम्बोधित करते हुए स्वदेशी को अपनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि देशवासी संकल्प ले कि हम वही वस्तु खरीदेंगे जिसको बनाने में भारत का पसीना बहा है। हमें मेक इन इंडिया को बढ़ाना होगा। भारत के प्रधानमंत्री के ये वाक्य देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिये उत्साहजनक है। परन्तु देश की वास्तविक स्थिति अभी भी कुछ और है। अधिकतम भारतीय, विदेशी वस्तुओं पर निर्भर हो गए हैं। उनकी निर्भरता का मुख्य कारण है, विकल्प। हमारे पास अभी तक विदेशी वस्तुओं का विकल्प नही है। अगर विकल्प है भी तो बहुत अधिक महंगा व कम गुणवत्ता वाला। जैसे कि दिवाली इत्यादि पर चीनी झालर आदि के बहिष्कार की बात होती है। लेकिन जब भारत की जनता बाजार में जाती है तो चीनी झालरों का विकल्प दिखाई नहीं देता। और अगर दिखाई देता भी है तो चीनी झालरों की तुलना में अत्याधिक महंगा होता है या फिर गुणवत्ता नहीं होती। मोबाइल को ही देख लो भारत के प्रत्येक वयस्क व्यक्ति के पास मोबाइल होगा, और अधिकतम के हाथों में विदेशी मोबाइल होगा। विदेशी फोन लेने के कई कारण है जिनमें मुख्य कारण ऐसा विकल्प नहीं होना। जैसे वाहनों में भारतीय कम्पनियों ने मजबूत व प्रभावी वाहनों को बनाया। जिस कारण देशभर में स्वदेशी वाहन बड़ी संख्या में दिखाई पड़ते हैं। जिस वस्तु का भी विकल्प देश में होगा उसकी स्वीकृति बड़ी संख्या के बढ़ेगी। क्योंकि भारत में देश के प्रति जिम्मेदारी समझने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

पतंजलि ने भारत को विदेशी वस्तुओं के छुटकारे का विकल्प दिया जनता ने उसको स्वीकार किया। भारत सरकार को बहुत जल्द भारतीय कम्पनियों को विकल्प के लिये तैयार करना होगा। उनको व्यपारिक छूट भी देनी होगी। हालांकि जबसे मोदी देश के प्रधानमंत्री बने है। तबसे भारत ने आत्मनिर्भरता की ओर अपने कदम मजबूती से बढ़ाये हैं। आजादी के बाद की सरकार ने कभी इस ओर ध्यान ही नही दिया नही तो दुनिया का नेतृत्व करने वाला भारत आज विदेशी वस्तुओं पर निर्भर नहीं होता। आज सैन्य शक्ति में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है, ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय मिसाइलों ने दुनिया को भारत की शक्ति का अहसास कराया। लेकिन अभी वो स्थिति नही है जो भारत की होनी चाहिए। स्वदेशी विकल्प के लिये केवल सरकार प्रयास करे ऐसा भी ठीक नहीं। उसके लिए जनता को आगे बढ़कर मुख्य भूमिका निभानी होगी। छोटे रोजगार भी लोगों ने बन्द कर दिये, जिसका फायदा विदेशी कम्पनियों ने उठाकर खुद को स्थापित कर लिया। इन विदेशी कम्पनियों ने पहले भारत की जनता को स्वदेशी वस्तुओं से दूर किया और फिर उसका विकल्प सस्ते मूल्य पर देकर उसका आदी बना दिया।

ऐसे ही भारत को भी जनता को विकल्प देकर स्वदेशी के लिये प्रेरित करना होगा। क्योंकि जो वस्तु जीवन के लिये अत्याधिक आवश्यक है, उसको लेना ही जरूरी है। फिर लेने वाला उसी को लेता है जो आसानी से उपलब्ध हो, सस्ती हो और आकर्षक होती है। विकल्प के साथ-साथ भारतीय वस्तुओं का प्रसार-प्रचार भी विदेशियों की तरह नही होता जिस कारण विकल्प होने पर भी समाज से दूर हैं। आज विश्व की स्थिति ऐसी हो गई है कि हर देश दूसरे को गिराने पर लगा है। हम मजबूती से खड़े रहे इसके लिये स्वदेशी की उपलब्धता के साथ-साथ स्वीकारिता बहुत जरूरी है।

(ललित शंकर रुड़की हरिद्वार)

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भरता

शहद का कारोबार घोल रहा जीवन में मिठास

रामपुर के अनबा गांव से निकले जयकिशन मौर्य कभी एक सामान्य मैकेनिक थे, लेकिन आज मधुमक्खियों से दोस्ती कर 3 करोड़ रुपये सालाना टर्नओवर तक पहुंच चुके हैं। महज दो बक्सों से शुरू हुआ यह सफर पहले तो गांव वालों की हँसी बना, लेकिन जल्द ही पूरे प्रदेश में मिसाल बन गया। जयकिशन ने मुरादाबाद से ट्रेनिंग ली, बैंक से 70 हजार का लोन लिया और देखते ही देखते 2000 से ज्यादा बक्सों के साथ उन्होंने आत्मनिर्भरता का ऐसा जाल बुना, जिसमें केवल मेहनत और आत्मविश्वास की मधुर गूंज थी। जयकिशन ने न केवल खुद को खड़ा किया, बल्कि 400 से ज्यादा युवाओं को भी मधुमक्खी पालन की ट्रेनिंग देकर आत्मनिर्भर बनाया। वह अब सरकारी प्रदर्शनी में भाग लेते हैं, शहद की सप्लाई करते हैं, दवाइयों से लेकर उपकरण तक मुहैया कराते हैं। उनके शहद में सिर्फ मिठास नहीं, बल्कि गांव की खुशबू, संघर्ष की महक और नए भारत का आत्मबल झलकता है। यह कहानी उस भारत की है, जो गांव से निकलकर दुनिया को मधुरता सिखा रहा है।

ज्वेलरी से कमाई तक की दमदार उड़ान!

जलेसर क्षेत्र के ऊंचागांव की महिलाएं अब सिर्फ घर नहीं, कारोबार भी संभाल रही हैं। आर्टिफीसियल ज्वेलरी बनाकर ये महिलाएं प्रतिदिन 500 रुपये तक कमा रही हैं और हर दस दिन में जिले के कस्बों में थोक व्यापारियों को अपने उत्पाद बेच रही हैं। कभी जो महिलाएं दूसरों पर निर्भर थीं, आज स्वयं रोजगार की मिसाल बन गई हैं। बिना किसी बड़ी पूंजी के शुरू किया गया यह व्यवसाय अब विस्तार की राह पर है। इनका फॉर्मूला है मेहनत के बदले मजदूरी और व्यापार में मुनाफा। यह पहल उस मानसिकता को सीधी चुनौती है, जो महिलाओं को सिर्फ चौके–चूल्हे तक सीमित देखना चाहती थी। इस क्षेत्र में करीब 900 स्वयं सहायता समूहों में 9000 महिलाएं सक्रिय हैं। ये महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि मेलों और बाजारों में अपने उत्पादों से लोगों का ध्यान भी खींच रही हैं। हर चूड़ी अब प्रतीक है आत्मविश्वास का, हर बाली में चमकता है संघर्ष और सफलता का सपना। ऊंचागांव की ये महिलाएं बता रही हैं – हुनर अगर हो, तो सीमाएं खुद मिट जाती हैं...।

तालाब से तरक्की की राह गांवों में मछली पालन बना आर्थिक सशक्तिकरण का जरिया

जब खेती के साथ आय के अन्य स्रोतों की जरूरत महसूस हुई, तब कुछ लोगों ने गांव की मिट्टी और पानी में ही तरक्की का रास्ता खोज लिया। उत्तर प्रदेश के कई छोटे–छोटे गांवों से आज ऐसी कहानियाँ निकल रही हैं, जो दिखाती हैं कि मछली पालन अब सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि गांवों की आर्थिक समृद्धि और रोजगार का मजबूत जरिया बन रहा है। वाराणसी के पिंडराई गांव के विक्रांत पाठक ने एक हेक्टेयर में मछली पालन से शुरुआत की। शुरुआत में चुनौतियाँ थीं, लेकिन सरकारी सहयोग और मत्स्य विभाग की वैज्ञानिक तकनीकों की मदद से उन्होंने आज 40 हेक्टेयर में मछलियों का विस्तृत उत्पादन शुरू कर दिया। वह हर साल लगभग 1.5 करोड़ रुपये की आय अर्जित कर रहे हैं और 150 किसानों को अपने साथ जोड़कर 30 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार दे रहे हैं। वहीं, जौनपुर की मीरा सिंह ने 2020 में एक एकड़ के तालाब से मछली पालन की शुरुआत की और अब 25 एकड़ भूमि में सालाना 1400 कुंतल मछली उत्पादन कर रही हैं। उन्होंने मछली बीज हैचरी भी शुरू की है और आस–पास के गांवों में बीज सप्लाई कर रही हैं। विक्रांत और मीरा जैसे प्रयास यह दिखाते हैं कि यदि सही मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं की मदद और स्थानीय संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग हो कृ तो ग्रामीण भारत न केवल आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि दूसरों को भी रोजगार देने वाला बन सकता है। मछली पालन आज खेती का पूरक बनकर गांवों में आर्थिक उन्नति की नई लहर ला रहा है।

आत्मनिर्भरता

ISSN No. 2581-3528

डेयरी से गोरखपुर की 1,445 महिलाएं बनीं लखपति दीदी

गोरखपुर मंडल की ग्रामीण महिलाओं ने आत्मनिर्भरता की एक नई मिसाल कायम की है। यहाँ राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत गठित श्री बाबा गोरखनाथ कृपा मिल्क प्रोड्यूसर ऑर्गनाइजेशन (MPO) से जुड़कर 500 गांवों की 25,000 महिलाएं अब दूध उत्पादन के माध्यम से नियमित आय अर्जित कर रही हैं। इस पहल की खास बात यह है कि महिलाओं को कंपनी की शेयरहोल्डर बनाया गया है, जिससे न केवल उनकी आमदनी बढ़ी है, अपितु निर्णयों में भागीदारी भी सुनिश्चित हुई है। केवल डेढ़ वर्ष के भीतर इस संगठन ने 50 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार खड़ा किया है और 1445 महिलाएं "लखपति दीदी" के रूप में उभरी हैं।

यह संगठन प्रति दिन करीब 62,000 लीटर दूध का संकलन कर रहा है। अब तक इन महिलाओं ने 1.66 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी भी स्वयं जोड़ी है। उनकी मासिक औसत आमदनी 7 से 8 हजार रुपये तक पहुँच चुकी है। एमपीओ उन्हें पशु आहार, चिकित्सा, थनैला रोग की जांच, कृत्रिम गर्भाधान और तकनीकी प्रशिक्षण जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करवा रहा है। एक प्रेरणादायक उदाहरण बरही गांव की कौशल्या देवी का है, जिन्होंने शुरुआत तीन गायों से की थीं। आज वे 10 गायों के जरिये प्रतिदिन 70 लीटर दूध बेचती हैं और अब तक 11.50 लाख रुपये की सालाना आय अर्जित कर चुकी हैं। लखनऊ में एक कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खुद इन महिलाओं के अनुभव सुने और महिला सशक्तिकरण का यह मॉडल पूरे प्रदेश में लागू करने की बात कही। यह मॉडल अब केवल डेयरी उद्योग का नहीं अपितु ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का सशक्त माध्यम बन चुका है।

हार्टिकल्चर टूरिज्म से पहाड़ों को मिल रही स्वरोजगार की नई पहचान

उत्तराखंड के नैनीताल जिले का शांत पहाड़ी गांव मुक्तेश्वर अब आत्मनिर्भरता की नई मिसाल बन रहा है। यहां के किसान पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर अपने फलदार बागानों को पर्यटन से जोड़ रहे हैं। सेब, आड़ू, नाशपाती और खुमानी के पेड़ों से सजी हरियाली अब सिर्फ खेती नहीं, कमाई और संस्कृति के संगम की भूमि बन गई है। गांव के महेश गलिया ने अपने घर को होमस्टे में बदला, बागों को संवारकर पर्यटकों के लिए खोला और आज उनके यहां आने वाले लोग न केवल पहाड़ों की ठंडी हवा और हरियाली का आनंद लेते हैं, बल्कि ताजे फल तोड़ते हैं, जैविक खेती देखते हैं और स्वादिष्ट कुमाऊंनी भोजन भी चखते हैं। यह अनोखा अनुभव उनके लिए यादगार बनता है और महेश जैसे किसानों के लिए आमदनी का साधन। इस प्रयास से न केवल आय बढ़ी है, बल्कि पलायन जैसी समस्या पर भी रोक लगी है। सरकार भी इस बदलाव को प्रोत्साहन दे रही है, सब्सिडी और संसाधन देकर। हार्टिकल्चर टूरिज्म अब उत्तराखंड के गांवों को नई पहचान, नया जीवन और नई दिशा दे रहा है।

उत्तर प्रदेश : सामान्य जानकारी

राज्य का पुनर्गठन	1 नवंबर, 1956 को
राज्य का नाम	उत्तर प्रदेश (24 जनवरी, 1950) पूर्व में संयुक्त प्रांत
राज्य की राजधानी	लखनऊ
राज्य का विभाजन	9 नवंबर, 2000 [उत्तर प्रदेश के 13 ज़िलों को काटकर उत्तरांचल (वर्तमान में उत्तराखंड) राज्य बना]
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में उत्तर प्रदेश के ज़िले	8 (मेरठ, गाज़ियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, हापुड़, बागपत, मुज़फ्फरनगर, शामली)
राज्य का क्षेत्रफल	2,40,928 वर्ग किमी. (भारत के क्षेत्रफल का लगभग 7.33%)
क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का भारत में स्थान	चौथा
अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार	23°52' उ. अक्षांश से 30°24' उ. अक्षांश और 77°05' पू. देशांतर से 84°38' पू. देशांतर के बीच
राज्य की लंबाई (पूर्व से पश्चिम)	650 किमी.
राज्य की चौड़ाई (उत्तर से दक्षिण)	240 किमी.
राज्य से लगा सीमावर्ती देश	नेपाल
नेपाल से सटे उत्तर प्रदेश के ज़िले	(7) महराजगंज, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी और पीलीभीत
उत्तर प्रदेश से सटे राज्यों/केंद्र शा.प्र. की संख्या	8 राज्य (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं हरियाणा) और 1 कें.शा.प्र. दिल्ली)
प्रदेश में कुल कृषि जलवायु क्षेत्र	9
प्रदेश में कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्र	4
मृदा समूह क्षेत्र	8
राज्य का सर्वाधिक वर्षा वाला ज़िला	गोरखपुर
राज्य का सबसे कम वर्षा वाला ज़िला	मथुरा
उ.प्र. के साथ सबसे लंबी सीमा साझा करने वाला राज्य	मध्य प्रदेश
उ.प्र.के साथ न्यूनतम सीमा साझा करने वाला राज्य	हिमाचल प्रदेश
उ.प्र. का सर्वाधिक औसत तापमान वाला क्षेत्र	बुंदेलखंड क्षेत्र
उ.प्र. के ऐसे मुख्यमंत्री, जिन्हें भारत के प्रधानमंत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ	चौधरी चरण सिंह और विश्वनाथ प्रताप सिंह
उ.प्र. के ऐसे विधानसभा अध्यक्ष, जो मुख्यमंत्री भी बने	श्री बाबू बनारसी दास एवं श्रीपति मिश्र
प्रदेश में प्रथम बार राष्ट्रपति शासन	25 फरवरी, 1968 से 26 फरवरी, 1969 तक
राज्य में अभी तक राष्ट्रपति शासन लगा	10 बार
राज्य विधानमंडल	द्विसदनात्मक
सर्वाधिक बार विधानसभा अध्यक्ष	श्री आत्माराम गोविंद खरे एवं केशरी नाथ त्रिपाठी (3-3 बार)
विधानसभा सदस्यों की संख्या	403
विधानपरिषद सदस्यों की संख्या	100
लोकसभा सदस्यों की संख्या	80
राज्यसभा सदस्यों की संख्या	31
राज्य विधानसभा का प्रथम गठन	संयुक्त प्रांत (1937), उत्तर प्रदेश (1952)
सर्वाधिक विधानसभा सीट वाला ज़िला	प्रयागराज (12 सीट)
प्रदेश का पहला केंद्रीय कारागार	आगरा (1846)
राज्य विधानसभा में आरक्षित सीटों की संख्या	86 (84 SC+2 ST)
सबसे कम विधानसभा सीट वाले ज़िले	श्रावस्ती/महोबा/चित्रकूट (2–2 सीटें)

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL

OFFICE

STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects